वर्ष 64 । अंक 04

सन्त निरंकारी

अप्रैल 2020 ₹ 15/-

गुरबचन के अनंत एहसान,
भूलें न सत्गुरु का तप महान

>> कठुआ, जम्मू एण्ड कश्मीर आगमन पर सद्गुरु माता सुदीक्षा जी का स्वागत करते हुए स्थानीय श्रद्धालु

>> सन्त निरंकारी सत्संग भवन झन्डे (लुधियाना) का उद्घाटन करते हुए सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

>> जम्मू एण्ड कश्मीर के जम्मू में आयोजित सत्संग समारोह में श्रद्धालुओं का अभिवादन स्वीकार करते हुए सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

सन्त निरंकारी

अप्रैल 2020

देश व विश्व की ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष 64 । अंक 04 । पृष्ठ 44

स्थायी

04
संपादकीय
हरजीत निषाद

05
सद्गुरु वचनामृत
सद्गुरु माता जी

लेख

09
ज्ञान के अनुसार हमारा जीवन हो
युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी

11
मानव एकता की आवश्यकता
प्रकाश जोशी

13
प्रेम से बढ़ेगी मानव एकता
कौशल्या राज 'करुण'

14
मानव एकता का अभियान
डॉ. रुकमणी भदौरिया

15
मानव एकता के लिए रक्तदान
राजेश कुमार

18
मानव एकता का स्वरूप
शंकर दास निरंकारी

19
सब आपस में मिलकर प्यार से रहें
ममतामयी निरंकारी राजमाता जी

20
चेतना का स्वरूप
कृष्णा खट्टर

23
धर्म प्यार और एकता सिखाता है
युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी

24
हम गुरसिख बन पाएं
अमरीक सिंह

26
सच्चा धर्म
जोगिन्दर मनचंदा

27
आओ करें रक्तदान
अशोक सोमानी

गीत कविताएं

17
गीत माधुर्य
विजय-बाबू, मंजु भाम्मरी 'विमल', मुलक राज 'आकाश'

25
लोकगीत
मुखलाल 'पावन', सुलतान सिंह निरंकारी, कैलाश

28
बाल वाटिका
हिमांशु

29
सूचना-समाचार
संवाददाता

संपादक । हरजीत निषाद

कार्यालय । पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110 009

लेखक के विचारों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

प्रकाशक एवं मुद्रक - **सी.एल. गुलाटी** ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9, हेतु एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, नोएडा-201305, (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया। संपादक: हरजीत निषाद।

ई-मेल: patrika@nirankari.org, वैबसाइट: http:www.nirankari.org
फोन: 011-47660200, फैक्स: 011-27608215, 47660300

कला सज्जा - निरंकारी आर्ट ग्रुप । फोटो: निरंकारी स्टूडियो

Subscription Details

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश: उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि

संपादकीय

मानव एकता

प्रेम मानव से मानव को जोड़ता है, उनमें एकता स्थापित करता है। नफ़रतें लोगों को दूर करती हैं, उनके मनों को अशांत करती हैं। हमारे मनीषियों ने एकता और मन की शांति को ही धरती का सबसे बड़ा सुख माना है।

हरजीत निषाद
harjit.nishad@nirankari.org

मानव में मानवता और मानव एकता दोनों का होना आवश्यक है। वैश्विक स्तर पर देखें तो विश्व में कितने ही देश-प्रदेश, बोली-भाषा, संस्कृतियां-सभ्यताएं हैं। एक-दूसरे से मिलने पर अपनी खुशी और सम्मान व्यक्त करने के लिए अभिवादन के कितने ही स्वरूप हैं। रंग, नस्लों का पूरा एक संसार है। इनमें हर एक की अपनी अलग खूबसूरती है। खान-पान, रीति-रिवाज और त्योहारों आदि का विविधता भरा रूप देखकर रचनहार के अद्भुत रचना कौशल पर हैरत होती है। यह विविधता हमरी धरती की सुन्दरता है। लाखों लोगों के रंग-रूप, बोली-भाषा एक जैसे हो जाएं यह तो सोचा भी नहीं जा सकता।

प्रेम मानव से मानव को जोड़ता है, उनमें एकता स्थापित करता है। नफ़रतें लोगों को दूर करती हैं, उनके मनों को अशांत करती है। देखा जाए तो भौतिक पदार्थों की लालसा भले ही इन्सानों को सबसे ज्यादा आकर्षित करती है लेकिन हमारे मनीषियों ने एकता और मन की शांति को ही धरती का सबसे बड़ा सुख माना है। अक्सर लोग इस बात पर विचार करते हैं कि क्या आज के ईर्ष्या-द्वेष वाले युग में एकता और शांति संभव है। इसका सहज सा समाधान सामने आता है कि घृणा और द्वेष पूर्ण विचारों से अगर मुक्त रहें तो निश्चित ही मन में शांति और सहजता होगी।

युगों-युगों से सन्तों-महात्माओं ने इन्सान को प्रेम, शान्ति और सद्भाव की शिक्षा देकर उन्हें एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। नफ़रतों पर कुठाराघात करते हुए उन्होंने यही कहा कि संसार में इन्सान को प्यार की ही सबसे ज्यादा जरूरत है, नफ़रतों से तो इन्सान को सदैव के लिए मुक्त ही हो जाना चाहिए। मानव जब प्रेम से शून्य हो जाता है तब वह दानव बनकर हिंसा और रक्तपात करने लगता है। जीवन देने वाला अपना मूल कर्तव्य त्यागकर जीवन लेने वाला बन जाता है जबकि सन्तों-भक्तों का स्वभाव हमेशा से त्याग और अहिंसा वाला ही रहा है। घर कच्चे हैं कोई बात नहीं, पर उनमें रहने वाले लोग सच्चे हों। बाहरी रंग-रूप आकर्षक हो या न हो इससे ज्यादा आवश्यक है कि लोगों का मन आकर्षक हो, मिलने पर अपनी और खींचने वाला हो। सद्गुरु ने हमेशा यही शिक्षा दी - 'अपकार नहीं उपकार करें।' उपकार करना देवत्व का प्रतीक है और बुरा करना, लोगों को नुकसान पहुंचाना, उन्हें मिटाना दानवता का प्रतीक है।

प्रेम, करुणा और परोपकार की मूर्ति बाबा गुरबचन सिंह जी ने मानव एकता की स्थापना के लिए एक बहुत प्रभावशाली सूत्र दिया- ''एक पिता परमेश्वर को जानकर ही हम सब एक हो सकते हैं और हममें यह भावना आ सकती है कि यह सारा विश्व एक ही परिवार है।'' यह परिकल्पना साधारण सोच से बहुत ऊपर की बात है। संसार को ऐसी उत्तम सोच पर चलाने वाले बाबा गुरबचन सिंह जी का शरीर 24 अप्रैल, 1980 को भ्रमित मानसिकता वाले लोगों ने नष्ट करके सोचा शायद उनके साथ उनकी सोच का भी अन्त हो जाएगा लेकिन उनके उपरान्त बाबा हरदेव सिंह जी ने 'रक्त नाड़ियों में बहे, नालियों में नहीं' का आह्वान करके सम्पूर्ण विश्व को एक नई दिशा प्रदान की। 24 अप्रैल को मिशन विश्व भर में मानव एकता दिवस का आयोजन करके बाबा गुरबचन सिंह जी को श्रद्धासुमन अर्पित करता है साथ ही रक्तदान देकर उनके द्वारा स्थापित मानवीय आदर्शों को मजबूती देने का यत्न करता है। मानव एकता के लिए मानवता की बलिवेदी पर कुर्बान होने वाले मानवता के मसीहा बाबा गुरबचन सिंह जी व अन्य बलिदानी सन्तों को मानव एकता दिवस के अवसर पर शत्-शत् नमन। स्मरण रहे कि सहनशीलता, दया, क्षमा महापुरुषों का स्वभाव होता है। मारने वाले से क्षमा करने वाला बड़ा होता है। हमें सद्गुरु ने क्षमा किया है हम भी दूसरों की कमियों व गुनाहों को अनदेखा कर लोगों को माफ करने का स्वभाव बनाएं और मानव एकता को मजबूत करें।

सद्गुरु वचनामृत

6 फरवरी, 2020 (रविवार) को बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स मैदान, मुम्बई में आयोजित विशाल सत्संग समारोह में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने फरमाया-

साध संगत जी, प्रेमा ने बोला, धन निरंकार जी!

साध संगत जी, आज यहां मुम्बई कुर्ला कॉम्प्लेक्स के इस प्रांगण में आप सब कई घंटों से सत्संग का आनंद ले रहे हैं। पूरे सत्संग में हमने श्रवण किया कि युगों–युगों से सन्तों ने यही सन्देश इस धरा पर दिया है कि हमें सबसे पहले अपनी पहचान करनी है कि हम कौन हैं और हम इस धरती पर क्यों आये हैं? वह क्या लक्ष्य है जो हमने प्राप्त करना है और ये सांसों की घड़ियां जब खत्म हो जाएंगी

तो अंत में हमारा क्या होगा, फिर हमने कहां जाना है? इस बात को अगर उदाहरण के तौर पर देखें कि एक हीरा है और एक कांच है। कांच की डिब्बी में हीरे को डाल लें। अब हम उस कांच की डिब्बी को बहुत हिफाजत से संभाल कर रखते हैं, फिर भी अगर वह कांच की डिब्बी गिर कर टूट जाती है तो भी वह हीरा अपने उसी अस्तित्व रूप में रह जाता है। इसी बात को अगर हम इस तरह समझें कि अपने शरीर को कांच मान लें और इस कांच की डिब्बी में यह जो हीरा है, भाव इस शरीर के अंदर यह जो आत्मा है तो हम खुद ही अनुमान लगा सकते हैं कि मोल किसका ज़्यादा होगा शरीर का या आत्मा का? निश्चित है कि आत्मा का मोल इस शरीर के सामने बहुत ही अधिक है क्योंकि आत्मा की यात्रा तो लंबी है और शरीर क्षण–भंगुर है, शरीर कुछ सालों के लिए ही है। जीवन की यह यात्रा खत्म होनी है, इस शरीर का साथ छूट जाना है। आत्मा परमात्मा का अंश है। असल में यह आत्मा ही है जो इस शरीर को चला रही है। हम इस बात को समझ लें कि आत्मा का क्या मकसद है इस शरीर में आने का? जब हम इस परमात्मा की पहचान कर लेते हैं तब आत्मा को समझ आता है कि उसका असली अस्तित्व क्या है। यही बात सन्तों ने कही है चाहे कोई भी धर्म ग्रंथ खोलकर देखें तो हर जगह यही लिखा है कि जब इस आत्मा का परमात्मा से मिलन होगा तभी मुक्ति संभव है।

हम अपने आप पर नज़र डाल कर देखें कि हम इस संसार में आकर संसार के रंग में ही रंग जाते हैं। बचपन से हमारी यह जीवन यात्रा जवानी से बुजुर्गी तक जाती है तो जो–जो भी हमें उस समय सही लग रहा होता है, हमारे जीवन में जिस चीज़ की महत्ता उस उम्र के हिसाब से होती है कभी स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई, आगे अपने कारोबार, घर-बार, कामकाज, परिवार और फिर ऐसे ही जब हम देखते हैं तो हम उसी के रंग में ज्यादा रंग जाते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि जब यह सांसें थमेंगी तो महत्ता जिस कार्य में रखनी थी वह कार्य हमने किया है या नहीं या बस यह माया जो *illusion* (भ्रम) है, यह जो कुछ पल की है, कुछ सालों की है उसी में तो नहीं खो गये? क्या हमने इस आत्मा का कल्याण किया या नहीं? हम अपने मन में अलग–अलग विकार ही रखते रहे, जैसे–जैसे इस जिंदगी को जिया अपने मन में नफ़रतें भी पाल लीं। अपने मन को हमने तंगदिली में रखा तो यह अनुभव भी हुआ कि हम कभी यह मान लेते हैं कि हम खुश नहीं हैं क्योंकि हमारे आस-पास का माहौल खुशनुमा नहीं है पर और गहराई से सोचें कि कभी–कभी एकांत में बंद कमरे में भी बैठे हों तो भी हमें उदासी अनुभव होती है। अगर स्थितियों ने ही मन को खुश या उदास रखना होता तो फिर हमें उस समय, उस एकान्त में तो उदास नहीं होना चाहिए था। बात कुछ और ही है। हम जिसको खुशी समझ रहे हैं यह अंदर की बात है, यह आन्तरिक है, बाहरी चीजों पर यह निर्भर नहीं करती।

कैसे हम अपने मन को हमेशा खुशी की अवस्था में, बल्कि उससे भी ऊपर का दर्जा जो इस परमानंद *(bliss)* की अवस्था का मिला है, इसमें रखें क्योंकि आनन्द की अवस्था ही सच्ची खुशी है। मनों में हमेशा खुशी रहे इसके लिए हमें क्या कार्य करना है? इस आत्मा का परमात्मा से जब मिलाप होता है, जब ब्रह्मज्ञान मिलता है तो उसके बाद पल–पल जीवन में यह समझ रहती है कि हमने किस समय क्या कार्य करना है। कुछ परिस्थितियां बनीं उस पर हमारी प्रतिक्रिया कैसी है, इस *reality check* (सच्चाई की जांच) वाली, आत्मनिरीक्षण वाली बात को सोचकर खुद अपना विश्लेषण करें कि कैसे यह हमारा मार्ग, जो सन्तों ने बताया है, सही मार्ग

अगर हम मनुष्य होकर मानवीय गुणों से दूर हैं, मानवीय मूल्यों से परे हैं तो हम इंसान होते हुए इंसानी गुणों के बिना इंसान कहलाने के भी काबिल नहीं हैं क्योंकि इंसान बनना सिर्फ़ इस शरीर का होना नहीं है, इन्सान इंसानियत और इस दिल में जो भावनाएं हैं उनके कारण है। हम हर एक को प्यार कर रहे हैं तो मनुष्य हैं, दिल में एक-दूसरे के लिए करुणा है, दया है तो मनुष्य हैं, एक-दूसरे के लिए यह भाव कि सामने वाले इंसान को हमारी वजह से कुछ आराम मिले तो मनुष्य हैं।

है या नहीं और उस पर हम चल भी रहे हैं कि नहीं। अगर हम संसार में मनुष्य का तन लेकर आये हैं तो हम इस तन से पूरी क्षमता तक वह कार्य ले रहे हैं कि नहीं ले रहे हैं। उदाहरण के तौर पर देखें कि अगर एक तालाब सूख गया है तो वह सूखा तालाब अब तालाब कहलाने का हकदार नहीं रहा। अगर कोई फूल मुरझा गया है, उसमें खुशबू नहीं रही तो वह सही मायने में फूल नहीं रहा। अगर किसी स्कूल की बिल्डिंग है पर उसमें बच्चे नहीं हैं, टीचर नहीं हैं तो वह बिल्डिंग असल रूप में स्कूल कहलाने के लायक नहीं है। जगहों की, वस्तुओं की कीमत तभी है जब उनके गुण उनसे मेल खाते हैं। अगर हम यह देखें कि हम मनुष्य होकर मानवीय गुणों से दूर हैं, मानवीय मूल्यों से परे हैं तो हम इंसान होते हुए भी इंसानी गुणों के बिना इंसान कहलाने के भी काबिल नहीं है क्योंकि इंसान बनना सिर्फ़ इस शरीर का होना नहीं है, इन्सान इंसानियत और इस दिल में जो भावनाएं हैं, उनके कारण है। हम हर एक को प्यार कर रहे हैं तो मनुष्य हैं, दिल में एक-दूसरे के लिए करुणा है, दया है तो मनुष्य हैं, एक-दूसरे के लिए वह भाव कि सामने वाले इंसान को हमारी वजह से कुछ *comfort* (आराम) मिले तो मनुष्य हैं। संसार के लिए, समाज के लिए, देश के लिए हम अगर ऐसा कार्य कर रहे हैं जो समर्पित भाव से है, सेवा भाव से है, मदद वाली भावना से नहीं बल्कि समर्पित सेवा भाव से किया गया है तो वह हर कार्य इस संसार के लिए वरदान है क्योंकि हम संसार में अपना कार्य सही ढंग से कर रहे हैं।

हमने अपने जीवन को उस मार्ग पर चलाए रखना है जो सन्तमति वाला मार्ग है। सन्तों ने हमेशा से जो मार्ग दर्शाया है, उस मार्ग पर चलने वाली बात पर अपना जीवन हमको बनाना है। भक्ति मार्ग में हमको प्यार से भरी हुई जिंदगी जीनी

एक ऐसी बेगर्ज़ मोहब्बत वाली भक्ति जिसमें इस परमात्मा के मार्ग पर हमको चलना है, उसको वैसे ही परवान करके उसी में आनंद लें, तो ही असली मायने में भक्ति की जा रही है, वरना हम अपनी तमन्नायें रखते हुए अगर सोचें कि कोई चीज़ मेरे अनुसार है तो ही मैंने भक्ति करनी है नहीं तो नहीं करनी, तो उसमें नुकसान सिर्फ़ हमारा है क्योंकि जो परमात्मा ने दिया है वह हमारे लिए बहुत है, उसी में ही हमने खुश रहना है। कोई मज़बूरी समझ कर खुश नहीं होना कि अब हम क्या कर सकते हैं? जो है सो है, ऐसे भाव से नहीं बल्कि यह मानकर कि परमात्मा ने यह स्थिति भी इसीलिए रची है क्योंकि इससे बेहतर हमारे लिए इस समय और कुछ नहीं है।

है। अगर हमारी भक्ति में प्रेमा भक्ति नहीं है तो यह फ़ायदे–नुकसान की जहां बात आ जाती है कि भक्ति करने पर भी यह सोच लेना कि अगर मेरा कोई फ़ायदा होगा, अगर मेरे मन में कोई ख़्वाहिश है, कोई तमन्ना है, वह पूरी होगी तो ही मैं इस परमात्मा से अपना रिश्ता बनाऊंगा वरना कोई जरूरत नहीं है तो फिर उस पर तो वही पंक्तियां ठीक बैठती हैं कि-

सजदे भी करूं शिकवे भी करूं ये भक्ति का दस्तूर नहीं।
भक्ति है नाम समर्पण का इसमें शर्तें मंजूर नहीं।

हमें इस बेग़र्ज मोहब्बत वाली बात, एक समर्पित प्यार की बात, ऐसी भक्ति जिसमें इस परमात्मा के मार्ग पर हमको चलना है, उसको हम पसन्द करें। बिल्कुल जैसा है उसको वैसे ही परवान करके उसी में आनंद लें, तो ही असली मायने में भक्ति की जा रही है, वरना हम अपनी तमन्नायें रखते हुए अगर सोचें कि कोई चीज़ मेरे अनुसार है तो ही मैंने भक्ति करनी है नहीं तो नहीं करनी, तो उसमें नुकसान सिर्फ़ हमारा है क्योंकि जो परमात्मा ने दिया है वह हमारे लिए बहुत है, उसी में ही हमने खुश रहना है और कोई मज़बूरी समझ कर खुश नहीं होना कि कोई वैसी स्थिति नही हैं तो अब हम क्या कर सकते हैं? जो है सो है, ऐसे भाव से नहीं बल्कि यह मानकर कि परमात्मा ने यह स्थिति भी इसीलिए रची है क्योंकि इससे बेहतर हमारे लिए इस समय और कुछ नहीं है तो कैसे हमने अपनी बोली, भाषा, अपने रहने के तरीके में, अपने व्यवहार में, अपनी सोच में सिर्फ़ अच्छे गुणों को ही डालना है, सिर्फ़ ऐसे ही भावों को प्राथमिकता देनी है जो हमें आत्म सुधार के मार्ग पर ले जाए और जो–जो भी हमसे किसी प्रकार से जुड़े हुए हैं उन इंसानों को भी वह मार्ग प्रभावित करे। उनके भी मन में इच्छा आए कि कैसे इस व्यक्ति की तरह ही अपने जीवन को जिया जाए।

हम खुद अगर इस परमात्मा-निराकार से जुड़े हुए हैं, ब्रह्मज्ञान की दात लेकर सेवा, सुमिरण, सत्संग के द्वारा अपने आपको इसके एहसास में रंगे हुए हैं तो हम अपने मन को ठहराव के साथ शीतल रखकर अपनी जीवन यात्रा चलाएंगे, अपने मन में अच्छी बातें रखकर अवगुणों और बुरी बातों को जल्दी से जल्दी हटाते रहेंगे तो ही हमारी जिंदगी सही मायने में भक्ति के मार्ग पर है।

दासी अंत में यही अरदास रखेगी कि उस तरह से तो मुंबई में ही महाराष्ट्र का समागम इतने सालों से होता रहा है पर इस बार नाशिक में हुआ तो आप सबने बहुत बढ़–चढ़कर भाग लिया, उधर भी एक मिनट के लिए भी नहीं सोचा कि अभी तक बहुत सुविधाजनक था और हमें ज्यादा यात्रा नहीं करनी पड़ती थी। अब चाहे वह यात्रा का रूप भी बढ़ गया होगा वहां पहुंचने तक फिर भी यह उत्साह भक्तों के मन में है कि इस मार्ग में अगर अंतिम परिणाम यह है कि अपना कल्याण होना है तो फिर कोई दूसरे तथ्य मायने नहीं रखते, फिर वह चीज असुविधा की तरह नहीं दिखती।

दातार सभी पर कृपा करे कि यह जो उत्साह है सत्संग के प्रति, सेवा के प्रति, सुमिरण के प्रति, इस निरंकार के साथ अपना हर पल इस एहसास में बिताने के प्रति, तो यह जज़्बा हमेशा कायम रहे, सभी के दामन में जहां सुख हों वहीं कोई अगर ऐसी भी परिस्थिति हो जो उस समय ठीक न लग रही हो, उसमे भी यह मानते चले जायें कि इसी में ही हमारा शुकराना है परमात्मा के प्रति जिसने हमें जीवन में इतना कुछ दिया है। दातार सभी पर कृपा करे कि हर एक की भक्ति और मजबूत होती चली जाये, यह जीवन और खुशबूदार बनता चला जाए।

साध संगत जी, धन निरंकार जी !

मानव एकता दिवस (24 अप्रैल) पर विशेष

ज्ञान के अनुसार हमारा जीवन हो

(युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी जीवन भर मानव एकता को सशक्त करने में लगे रहे। मानवता को जोड़ने के लिए उन्होंने बहुत प्रभावशाली ढंग से विश्व जनमानस को मानव एकता का सन्देश दिया। 24 अप्रैल, 1980 को वे भ्रमित मानसिकता की हिंसा के शिकार हो गए। सन्त निरंकारी मिशन 24 अप्रैल को विश्व भर में मानव एकता दिवस समारोह का आयोजन कर उन्हें याद करता है। उनके आध्यात्मिक विचारों का प्रस्तुत अंश मानवता के प्रति उनके उपकारों को उजागर करता है।)

❁ बाबा गुरबचन सिंह जी

प्रभु की जानकारी होते हुए भी यदि हमारा व्यवहार, हमारा चलन, ज्ञान के अनुसार नहीं तो इससे कभी हमारे मन की शुद्धि नहीं होती और न ही हमारे जीवन में कोई परिवर्तन ही आता है। जो सेवा करते हैं, सत्संग करते हैं, सुमिरण करते हैं, उन्हीं के मन में इस नाम का प्रवेश होता है, उनका जीवन नाम के रंग में रंग जाता है। फिर यह नाम, यह दातार हमारी हर दम, हर पल रक्षा करता है। इस नाम ने, निरंकार-दातार ने ही भक्तों को हमेशा बचाया है।

सभी सन्त-महात्माओं और धर्मग्रन्थों के बयान हैं कि करनहार केवल परमपिता परमात्मा है। बिना प्रभु के हुक्म के इन्सान कुछ नहीं कर सकता। यदि इन्सान ही करने वाला होता तो वह दूसरों को शायद जीने भी न देता। मूल ताकत का स्वामी निरंकार-प्रभु स्वयं है, इसलिए हमें इसी पर पूर्ण विश्वास रखना है।

जब भी सच-झूठ की टक्कर होती है तो सच की हमेशा जीत होती है। वैसे शुरू में झूठ प्रबल दिखाई देता है, लेकिन आखिर में जीत सच्चाई की ही होती है। दुनिया

परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करके इसको अपने जीवन का आधार बनाना है। इसके अनुसार अपना चलन और व्यवहार बनाना है, इसके रंग में रंग जाना है। सत्य प्रभु का सहारा ही सच्चा सहारा है। सच की हमेशा जीत होती है। वैसे शुरू में झूठ प्रबल दिखाई देता है, लेकिन आखिर में जीत सच्चाई की ही होती है। दुनिया देखती है कि सच्चाई में कितनी शक्ति होती है, कितनी महानता होती है। भक्त हमेशा नम्रता और प्यार करने वाले होते हैं और यह नाम, यह दातार इनकी रक्षा के लिए हमेशा हाजिर रहता है।

देखती है कि सच्चाई में कितनी शक्ति होती है, कितनी महानता होती है। भक्त हमेशा नम्रता और प्यार करने वाले होते हैं और यह नाम, यह दातार इनकी रक्षा के लिए हमेशा हाजिर रहता है। दातार इनकी हर समय निगरानी करता है। यह भयानक से भयानक समय में भी इनको बचाता है।

राम-नाम ही सब रोगों की औषधि है, सभी दुःख मिटाने वाला नाम ही है। नाम के बिना और कोई ऐसी शक्ति नहीं जिसे हम दुःखों का नाश करने वाला मानें। हम सांसारिक शक्तियों को देखते ही हैं कि एक समय जो शक्ति हमारा सहारा बनती है, कुछ समय बाद वही शक्ति हमारी दुःख-दुविधा का कारण बन जाती है। उसी शक्ति से हमें तकलीफ शुरू हो जाती है। संसार की शक्तियों का हिसाब-किताब कुछ ऐसा ही है। केवल राम-नाम एक ऐसी महान शक्ति है जो हमेशा ही हमारा सहारा बनी रहती है। यह शक्ति हमसे कभी भी दूर होने वाली नहीं, यह सदा अंग-संग रहने वाली है। इसको कोई झुठला नहीं सकता। यह शक्ति इस जीवन में भी हमारे साथ है और यदि यह जीवन में न रहे, यह शरीर न रहे, तो भी यह हमारे साथ रहने वाली है।

नाम निरंकार परमात्मा ही है। जो इसको जानता है, उसको निरंकारी कहते हैं। यह सीधी-सी स्पष्ट बात है, यह कोई ऐसी बात नहीं जो हमारी समझ में न आए। हमने इस निरंकार को जानकर दृढ़ विश्वास से सुमिरण करते हुए, इसकी ही आराधना करते हुए, अपना जीवन-व्यतीत करना है। सुमिरण पर अधिक से अधिक ध्यान दें, क्योंकि सुमिरण से ही दृढ़ता मिलती है, भय दूर होते हैं और मन स्थिर रहता है, मन डांवाडोल नहीं होता। सब दुःखों को दूर करने वाला यह सुमिरण हमें पल-पल करते रहना है ''तू ही निरंकार, मैं तेरी शरण हाँ, मैंनू बख्श लौ।''

राम-नाम में इतनी शक्ति होती है कि यह बिगड़ी बात को भी बना देता है और जो कोई उलझन नज़र आती है, यह उसको भी सुलझा देता है। जब कभी हम घबरा जाते हैं कि अब हमसे कुछ होने वाला नहीं, तब यह नाम ही है जो हमारी बिगड़ी बात को बनाता है। जो किसान हैं अथवा जो घरों में पौधे लगाते हैं, उनको यह तजुर्बा होगा कि जब पौधों की गुड़ाई की जाती है, यानि पौधे के आस-पास से घास निकाली जाती है, तो पौधों की जड़ें हिलने से एक बार तो पत्तों में थोड़ी-सी मुरझाहट दिखाई देती है, लेकिन दूसरे या तीसरे दिन ताजा पानी और खाद मिलने से ये सभी पौधे पहले से भी अधिक हरे-भरे दिखाई देते हैं।

यदि हम इस दातार पर ही दृढ़ता रखेंगे तो हमारी हर मुश्किल आसान हो जायेगी, हमारा कोई भी काम रुक नहीं सकता लेकिन यदि हम इस दातार का विश्वास छोड़कर, नाशवान चीजों का सहारा लेते हैं तो हम डांवाडोल होने लगते हैं। संसार की कोई भी वस्तु स्थिर रहने वाली नहीं। उन चीजों का सहारा लेने से, उनके तबदील होते ही, हम भी डगमगाने लगते हैं। हम भयभीत हो जाते हैं।

जो इस राम नाम को बाँटने वाला है, जो देने वाला है, जो नाम पर विश्वास दिलाने वाला है, वही सद्गुरु होता है। वह सद्गुरु नहीं जिसने केवल पीले या सफेद रंग के कपड़े पहने हुए हों या लम्बी-लम्बी जटाएं रखी हुई हों। ये तो बाहर के दिखावे होते हैं, ये सद्गुरु की निशानियां नहीं हुआ करतीं। सद्गुरु हमेशा हमारे विश्वास को इस तरफ लाता है कि यह दातार, जो हमारे अंग-संग है, यही हमारा पालनहार है। सद्गुरु हमें कभी भटकने नहीं देता, भक्त ऐसा नहीं मानता कि कोई और भी शक्ति है, जिससे हमें सहारा मिलेगा।

मानव एकता की आवश्यकता

❁ **प्रकाश जोशी** (मुंबई, महाराष्ट्र)

मानव एकता की बातें सिर्फ आज नहीं बल्कि युगों-युगों से हो रही हैं। समाज सुधारक, धर्म प्रचारक और राजनीतिज्ञ अपने-अपने तरीके से एकता की आवाज देते आ रहे हैं। ''आवाज दो हम एक हैं'' का नारा गली-गली में गूंजता हुआ सुनाई देता है परन्तु सिर्फ नारों से या बातों से बात नहीं बनती। नारा जब तक हृदय में नहीं उतरता तब तक मानव एकता भी एकता नहीं होती। मानव एकता के लिए बाहरी एकता की नहीं बल्कि भीतरी एकता की ज्यादा जरूरत होती है।

मानव एकता का मतलब यह नहीं है कि सभी मानव एक जैसी शक्ल-सूरत के हो जायें, एक ही भाषा या एक ही बोली बोलने लग जायें, एक-सा खाना-पीना या पहरावा पहनने लग जायें, एक जैसे मकान में रहने लग जायें, एक सा काम करने लग जायें, इस प्रकार तो जीवन ही नीरस सा लगने लगेगा। इसलिए प्रयास ऐसे हों कि अनेकता में एकता और विभिन्नता में एकरूपता दिखाई दे। जैसे एक गुलदस्ते में अलग-अलग फूल सुशोभित होते हैं, तो उनकी सुन्दरता एवं खुशबू और भी बढ़ जाती है। उसी तरह अलग-अलग भाषा-प्रान्त, अलग-अलग संस्कृति एवं मान्यता वाले लोग जब मिलजुल कर रहते हैं तो एक स्वर्ग का नजारा बन जाता है।

थोड़े समय के लिए, थोड़े से लोगों में एक जुटता या एकता जरूर नज़र आती है लेकिन वो एकता ज्यादा समय तक नहीं टिक पाती क्योंकि उसकी बुनियाद स्वार्थ, खुदगर्ज़ी और बनावटी उसूलों पर आधारित होती है।

जब तक हम एक-दूसरे के प्रति दिल में प्रेम, सहयोग, सम्मान और सहिष्णुता की भावना नहीं अपनाते, तब तक वास्तविक मानव एकता संभव नहीं है। संसार की एकता, एक संतरे के फल की तरह है, संतरा बाहर से तो एक दिखाई देता है, परंतु अंदर से उसकी फांके अलग-अलग होती हैं। सन्त-महात्मा, ज्ञानी पुरुष खरबूजे की फांक की तरह होते हैं जो बाहर से बेशक अलग-अलग दिखाई देते हैं परन्तु अंदर से पूरी तरह एक होते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि उनकी बुनियाद एक परम अस्तित्व- 'सत्य-प्रभु' पर आधारित होती है। एकता के लिए सबसे पहले जरूरी है 'एक' परमात्मा को जानें जिसके हम सभी अंश है।

इक्को नूर है सभ दे अन्दर नर है चाहे नारी ए।
ब्राह्मण खतरी वैश हरिजन इक दी ख़लकत सारी ए।

मानव एकता के लिए सबसे जरूरी है- 'प्रेम', जो निश्छल, निष्काम एवं निरिच्छित हो। जब हम सब जगह और सबमें परमात्मा का दीदार करते हैं, तब यह सारा विश्व ही हमारा अपना परिवार लगने लगता है और हम सभी से प्यार करने लग जाते हैं। इस तरह वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना आने पर मानव एकता साकार हो उठती है। प्यार ही है जो हमें एक-दूसरे के करीब लाता है और हमें जोड़ने का

काम करता है। निरंकारी बाबा जी कहते हैं, ''धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं।'' धर्म क्या है? ''धर्म न दूसर सत्य समाना'' धर्म का दूसरा नाम सत्य है। सत्य क्या है? ''आदि सचु जुगादि सचु।। है भी सचु नानक होसी भी सचु।।'' या ''तीन काल है सत्य तू, मिथ्या है संसार'' अर्थात् ईश्वर ही सत्य है और ईश्वर क्या है? प्रेम ही ईश्वर है और ईश्वर ही प्रेम है। ईश्वर का दूसरा नाम ही प्रेम है।

प्रेम ही हमें एक-दूसरे से जोड़ता है। प्रेम जीवन में आ जाने पर हम सभी को अपना समझने लग जाते हैं। प्रेम जब हमारे रोम-रोम में बस जाता है तो किसी से भी वैर, द्वेष, नफ़रत करने की गुंजाइश नहीं रहती।

प्यार सजाता है गुलशन को और नफ़रत वीरान करे।

हमें एक-दूसरे की बातों को सहना होगा तथा एक-दूसरे की भूलों को क्षमा करना होगा। खाना खाते समय गलती से जब दाँत के बीच में जीभ आ जाती है तो हम दाँत को

प्रेम, संवेदना, सहयोग, सम्मान, एकजुटता और अपनत्व से ही मानव एकता आएगी जो आज के समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

तोड़कर बाहर नहीं करते। नहाते समय गलती से आँख में उंगली आ जाये तो हम उंगली को नुकसान नहीं पहुंचाते। इसी तरह वैश्विक तौर से सभी इन्सान हमारे परिवार के अंग हैं, अगर किसी से भूल हो जाये तो उसे अपने से दूर नहीं करना चाहिए बल्कि 'क्षमा करो और भूल जाओ' का रूप अपनाना चाहिए।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज अपने प्रवचनों में अक्सर कहते थे कि हम शरीर के सभी अंगों की सलामती चाहते हैं। सभी अंग अच्छी तरह से कार्य करें। सबका बराबर विकास हो। ऐसा हम नहीं कहते कि मेरी आंख तेज हो तथा दिमाग कमजोर हो, या जुबान तेज हो और कान से कम सुनें या हाथों में ताकत ज्यादा हो और पैर कमजोर हो जायें। हम पूरे शरीर का सर्वांगीण विकास और स्वास्थ्य चाहते हैं। इसी तरह मानव एकता के लिए भी समूची मानव जाति का विकास होना चाहिए। मानव परिवार का हर अंग स्वस्थ होना चाहिए। जैसे एक जंजीर की मजबूती उसकी प्रत्येक कड़ी की मजबूती पर निर्भर होती है। अगर एक कड़ी कमजोर है तो बाकी कड़ियां चाहे कितनी भी मजबूत क्यों न हों तब भी वह जंजीर कमजोर ही कहलायेगी। इसी तरह से मानव एकता में भी हर ईकाई को मजबूत बनाना होगा। इस प्यार की जरूरत आज से नहीं युगों-युगों से रही है। जहां प्यार है, वहीं स्वर्ग है, वहीं एकता है, मिलवर्तन और विश्व भाईचारा है।

हमें एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील होना होगा। एक-दूसरे के दुःख-दर्द एवं पीड़ा को समझना होगा और उसका निवारण भी करना होगा। हमारे शरीर के सभी अंग एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील होते हैं। जब पैर में काँटा लगता है तो उसके दर्द से आँख में पानी आ जाता है। हाथ, पैर में लगे काँटे को निकालने के लिए आगे आता है, हाथ आँख के आँसू भी पोंछता है। शरीर के किसी एक अंग में तकलीफ होने पर पूरा शरीर उसकी पीड़ा महसूस करता है। इस तरह से हर समय, हर हालत में शरीर की एक जुटता एवं संवेदनशीलता देखने को मिलती है। इसी तरह मानव एकता भी पूरी तरह से सार्थक तब कहलायेगी जब हम एक-दूसरे के सुख-दुख में सहयोगी होंगे, संवेदनशील और अपनेपन का भाव रखेंगे।

आपसी एकता एवं विकास के लिए एक-दूसरे को सहयोग देना होगा और एक-दूसरे से सहयोग लेना होगा। आँख, नाक, कान, मुंह, हाथ, पैर आदि शरीर के अलग-अलग अंग हैं। इनके अलग-अलग कार्य हैं। शरीर को सुचारू रूप से चलाने के लिए ये सभी एक-दूसरे का सहयोग करते हैं। इसी तरह परिवार, समाज, देश तथा विश्व में एकता लाने के लिए हर किसी को अपनी पहचान बनाये रखते हुए आपस में एक-दूसरे का पूरक और सहारा बनना होगा। मिशन का यह उद्घोष भी है कि -

मानव को मानव हो प्यारा, एक दूजे का बनें सहारा।

हमें एक-दूसरे की विचारधारा, संस्कृति, मान्यता, खान-पान, पहरावा आदि का आदर करना होगा और उसे स्वीकार करना होगा। इनकी भिन्नता के कारण किसी से घृणा या नफ़रत नहीं करनी होगा। अन्य समाज एवं धर्म की व्यवस्थाओं एवं मान्यताओं को विशाल हृदय से स्वीकार कर पाने से ही सही मायने में मानव एकता आ सकती है।

इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि हम सबका बराबर सम्मान करें। कोई छोटा या कोई बड़ा नहीं, कोई ऊंचा या नीचा नहीं। सबकी अपनी-अपनी अहमियत और उपयोगिता है।

मानव एकता के बारे में एक उदाहरण है - एक कक्षा में बच्चों को एक विश्व का नक्शा टुकड़े-टुकड़े करके दिया गया और कहा गया इसे फिर से जोड़ कर एक बनाओ। सभी बच्चे मुश्किल में आ गये। एक बच्चे ने उसे जल्दी से जोड़ करके दिखाया तो शिक्षक ने हैरानी से पूछा कि ''ये कैसे संभव हो गया?'' बच्चे ने जवाब दिया, मुझे विश्व के नक्शे के बारे में जानकारी तो नहीं है लेकिन मैं इन्सान के शरीर के बारे में जानता हूं। इस नक्शे के पीछे एक इन्सान की तस्वीर थी। मैंने शरीर के अंगों को क्रमबद्ध जगह लगाना शुरू किया, जैसे ही मानव शरीर एक हो गया है मैंने उसे पलट दिया और विश्व का नक्शा सामने आ गया। इसी तरह अगर मानव से मानव जुड़ जाये तो विश्व में मानव एकता, भाईचारा और एकत्व स्थापित होने में देर नहीं लगेगी। आज समय की मांग यही है -

भाव हो अपनत्व का, मिलवर्तन और एकत्व का

मानव एकता के लिए उपरोक्त सभी पहलू महत्वपूर्ण तो हैं परन्तु विनम्रता के बिना सारे गुण उसी तरह व्यर्थ हो जाते हैं जैसे अच्छी खीर बनाने के बाद उसके ऊपर राख डालने से खीर व्यर्थ हो जाती है। मानव एकता के लिए विनम्रता यानि निर-अहंकारिता का होना निहायत जरूरी है।

प्रेम से बढ़ेगी मानव एकता

❁ **कौशल्या राज 'करुण'** (उरई, उ.प्र.)

कोई परिवार चाहे बड़ा हो या छोटा, अमीर हो चाहे गरीब वह तब तक सुखी नहीं रह सकता जब तक परिवार के सभी सदस्य प्रेम व एकता के साथ आपस में मिल-जुलकर रहना नहीं सीख जाते। यही बात समाज और संसार जैसे बड़े मानवीय परिवारों पर भी लागू होती है। आज संसार जिन बड़े-बड़े संकटों व समस्याओं से जूझ रहा है भले ही वो युद्ध हो या आतंकवाद, अधिकांश को मानव एकता के अभाव ने ही जन्म दिया है।

मनुष्य, मनुष्य के बीच दूरी तब बढ़ती है जब उनके दिलो-दिमाग पर भ्रमों-सन्देहों की धूल जम जाती है जिससे वे अपनी आत्मा के दिव्य स्वरूप को नहीं देख पाते और न ही मनुष्य जीवन के वास्तविक मर्म को समझ पाते हैं। धार्मिक ग्रन्थों की संकीर्ण व्याख्याएं और भौतिकतावादी जीवन की जटिलताएं मनों में ऊहापोह की स्थिति उत्पन्न करती हैं। इस तरह व्यक्तिगत व सामाजिक चेतना द्वन्द्वात्मक भंवर में फंस जाती है और सब ओर वैर, नफ़रत तथा संघर्ष के शोले मानव सभ्यता के वजूद को मिटाने हेतु आमादा हो उठते हैं। सन्त निरंकारी मिशन अस्तित्व में आने के बाद से निरन्तर इसी प्रयास में पूरी शिद्दत के साथ जुटा हुआ है कि कैसे मानव मनों के बीच की दूरियों को मिटाया जाए। यह दुनिया केवल तभी खूबसूरत बनेगी जब धरती पर रहने वाले सभी इन्सान आपस में प्रेममयी एकता के बंधन में रहना स्वीकार कर लेंगे और दिलों के दरम्यान खाई चौड़ी करने वाले क्षुद्र भेदों को हमेशा के लिए अलविदा कह देंगे। सन्त निरंकारी मिशन सर्वव्यापी निराकार प्रभु परमात्मा के स्वरूप से परिचय कराकर लोगों के सोचने-समझने का दायरा बढ़ाने में विश्वास रखता है। मिशन की आधारभूत मान्यता ही ये है- 'धर्म जोड़ता है, तोड़ता नहीं' और 'एक को जानो, एक को मानो, एक हो जाओ।' सन्त निरंकारी मिशन के पांचों प्रण मनुष्यों के बीच एकता का स्वर बुलन्द करते हैं तो सम्पूर्ण अवतार बाणी (पद सं. 91 व 205) में भी कहा गया -

पांच तत्व के पुतले देखो भिन्न भिन्न इन्सान बने।
कोई हिन्दू कोई सिक्ख ईसाई और कोई मुसलमान बने।
इस मानव की बुद्धि ऊपर पड़े हैं परदे रातों के।
राग अनैतिक छेड़ रहा है यह नर श्रेणी जातों के।

तथा

पूरा सत्गुरु जाति पांति के झगड़े सभी मिटाता है।
कहे 'अवतार' गुरु इन सबको एक ही साथ बैठाता है।

जहां सम्पूर्ण अवतार बाणी में संकीर्णताओं की जंजीरों में बंधे संसार का सजीव चित्रण पेश किया गया तो वहीं सम्पूर्ण हरदेव वाणी (पद सं. 128) में इन जंजीरों से संसार को मुक्त कराने का रास्ता भी स्पष्ट रूप से दिखाया गया है-

सन्तों ने बदलना है ये नक्शा कुल संसार का।
नफ़रत की गहरी खाई पर पुल है बनाना प्यार का।
गुरु ज्ञान से वैर मिटेगा बरसेगा बस प्यार ही प्यार।
कहे 'हरदेव' दीवार रहित ये हो जायेगा कुल संसार।

युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी का कहना था कि ''अगर हृदय विशाल हो तो संकीर्णता खुद-ब-खुद समाप्त हो जाती है। देश, संस्कृति, भाषा, जाति-पांति, खान-पान व पहनावे के भेद समाप्त हो जाते हैं, सारा संसार अपना लगता है। लेकिन यह विशालता विशाल निरंकार प्रभु के साथ जुड़कर ही प्राप्त हो सकती है।'' आपका प्रबल विश्वास इस बात में था कि युवा जोश व संकल्पबल से नामुमकिन समझ आने वाले कार्य भी मुमकिन बनाये जा सकते हैं। युवाओं में निहित असीम ऊर्जा को समाज उपयोगी कार्यों में खपाने हेतु उन्हें सकारात्मक खुराक व उचित मार्गदर्शन की पग-पग पर आवश्यकता पड़ती है। युवा चेतना कुंद न हो और सही दिशा से न भटके इसके लिए बाबा गुरबचन सिंह जी ने 1973 में आयोजित मसूरी कॉन्फ्रेंस में समाज की भलाई हेतु सभी से नशीले पदार्थों का सेवन छोड़ देने का आह्वान किया। यही नहीं बल्कि बाबा जी ने दहेज व दिखावे के दबाव से होने वाली सामाजिक क्षति को रोकने एवं नारी गरिमा को उठाने के उद्देश्य से सादगीपूर्ण सामूहिक विवाहों को भी प्रोत्साहित किया ताकि भक्तों की अनमोल ऊर्जा व्यर्थ के सामाजिक दिखावों हेतु आजीवन धन बटोरते रहने में ही खर्च न हो जाए। इंसानी जीवन की सार्थकता संसार को सुन्दर बनाने में है, धरा को स्वर्ग बनाने में है। अगर इस धरती को स्वर्ग बनाना है तो मानवता को खाँचों में काटने वाली सभी दीवारों को गिराना होगा और खाईयों को पाटकर बहुत सारे पुल बनाने होंगे। एकत्व आधारित दीवार रहित विश्व का सपना एक अद्भुत रोशन मीनार की भांति हमें जीवन पथ पर सदैव सजग बनाए रखे और हम 'प्यार सजाता है गुलशन को और नफ़रत वीरान करे' के सन्देश में निहित भावना को जिन्दगी जीने का मूलमंत्र बना सकें यही विनम्र आग्रह है।

नफ़रत ख़ुद ही मिट जायेगी प्यार अगर बढ़ जायेगा।
कहे 'हरदेव' गुरू ज्ञान से दुनिया में सुख आयेगा।

मानव एकता का अभियान

❁ डॉ. रुकमणी भदौरिया (उज्जैन, म.प्र.)

ॐ पूर्ण मदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते।

उपनिषद् का यह मंत्र ऐसे पूर्ण परमात्मा की ओर संकेत करता है जो केवल एक ही है, जो पूर्ण है और जिसमें किसी भी प्रकार का कोई विकार नहीं है क्योंकि जो आकार रूप है उसमें कहीं न कहीं कोई कमी तो अवश्य ही रहेगी, लेकिन जो निराकार है वह पूर्ण है और पूर्ण परमात्मा में ही यह सम्पूर्ण सृष्टि समाई हुई है।

सन्त निरंकारी मिशन का भी उद्देश्य यही है चाहे वो बाबा बूटा सिंह जी हों, बाबा अवतार सिंह जी हों, बाबा गुरबचन सिंह जी हों, बाबा हरदेव सिंह जी हों, माता सविन्दर हरदेव जी हों या माता सुदीक्षा जी हों, सभी ने एक ही परमात्मा की ओर संकेत किया है। इस अविनाशी परमपिता की ओर संकेत किया है। यह परमपिता-परमात्मा एक ही है, यह सबका है, सम्पूर्ण मानवता इसी निरंकार-प्रभु में समाई हुई है।

वेद, उपनिषद्, पुराण आदि सभी आदर्श धर्मग्रन्थ भी एक ही परम आत्मा को दर्शाते हैं। इस एक परमात्मा को सभी कुछ मानते हैं। इधर-उधर भटकने की बात नहीं करते हैं। इसी परमात्मा में सम्पूर्ण मानव आत्मा को देखते हैं तभी तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहकर सभी को एकता के सूत्र में बांधना चाहते हैं। इसी को ध्येय मानकर बाबा गुरबचन सिंह जी ने हमेशा मनुष्य में प्यार, नम्रता, सहनशीलता, परोपकार जैसे मानवीय मूल्यों को उत्पन्न करने का प्रयास किया। इन मानवीय मूल्यों के कारण ही इन्सान रक्तपात नहीं करता बल्कि रक्तदान करके लोगों का जीवन बचाता है। लोगों की भूख-प्यास, दुःख-दर्द को मिटाने का प्रयास करता है।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर आज मिशन स्वैच्छिक रक्तदान करने वाली संस्थाओं में अग्रिम है। वर्ष 1986 से रक्तदान शिविरों का आयोजन 24 अप्रैल को बाबा गुरबचन सिंह जी की याद में किया जाता है, जिन्होंने सत्य, प्रेम और मानव एकता के लिए अपने जीवन का बलिदान किया।

बाबा जी सभी में एकता की भावना का विकास करना चाहते थे, वे -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग भवेत।

की भावना को जन-जन तक पहुंचाना चाहते थे। इसलिए उनके बलिदान दिवस को 'मानव एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उन्हीं के विचारों को आगे बढ़ाते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने भी समत्व, अपनत्व और एकत्व का संदेश प्रत्येक मानव तक पहुंचाया। आज माता सुदीक्षा जी भी सारे विश्व को एक सूत्र में बंधा हुआ देखते हैं और सभी को दिखाना चाहते हैं।

सदियों से यह एकत्व की भावना फलीभूत होती आ रही है चाहे वह वैदिक युग हो, सत्युग हो, त्रेता, द्वापर या फिर कलयुग हो वह समय या काल से बदलता नहीं है। हम सभी एक-दूसरे की रक्षा करें, हमें साथ-साथ विद्या के फल प्राप्त हों, हम साथ-साथ तेजस्विता प्राप्त करें और हम परस्पर द्वेष न करें।

आज सद्गुरु माता सुदीक्षा जी यही भाव सबमें देखना चाहते हैं कि सभी एक साथ रहें, सभी एक ही मार्ग पर चलकर इस परमपिता परमात्मा को प्राप्त करें, सभी में इस प्रभु का तेज विद्यमान हो। एकत्व का वास्तविक अनुभव भी तभी होता है जब हम सब कुछ इस परमशक्ति का ही मानते हैं। सन्त निरंकारी मिशन इसी का जीता-जागता स्वरूप है, तभी कहा गया -

प्रेममय एहसास है एकत्व का, स्नेह समता और अपनत्व का।
सज रहा संसार यह एकत्व का, प्रेम समदृष्टि सहज अपनत्व का।

मानव एकता के लिए रक्तदान

❁ **राजेश कुमार** (लखनऊ, उ.प्र.)

आध्यात्मिक जाग्रति का मिशन, सन्त निरंकारी मिशन रक्तदान में उल्लेखनीय योगदान देते हुए स्वैच्छिक रक्तदाता संस्थाओं में सबसे आगे है। मिशन ने देश के हर भाग में तथा विश्व के अनेकों देशों में रक्तदान शिविरों के आयोजन द्वारा नई आशा जगाई है।

24 अप्रैल, 1980 को बाबा गुरबचन सिंह जी के मानवता के लिए दिए गए बलिदान के उपरान्त बाबा हरदेव सिंह जी ने दिल्ली में 1986 में प्रथम रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इसके बाद से मिशन के लाखों श्रद्धालु लगातार रक्तदान करते आ रहे हैं।

रक्तदाता को रक्तदान का अनेक रूपों में लाभ प्राप्त होता है। सर्वप्रथम वह आत्म संतोष जो किसी भी दानदाता को प्राप्त होता है, रक्तदाता को भी मिलता है। रक्तदान का संतोष तो अन्य दान से कहीं बढ़कर है क्योंकि इसके द्वारा किसी के प्राणों की रक्षा का समाधान प्राप्त होता है। समाज में रक्तदाता अपने महत्व और उपयोगिता के भाव से गौरव का अनुभव करता है। रक्तदान से उसके शरीर का पुराना रक्त , नये बनने वाले युवा सक्रिय रक्त से प्रतिस्थापित हो जाता है, जिससे रक्तदाता और अधिक ऊर्जावान व स्वस्थ महसूस करता है। रक्तदान के साथ रक्त के कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम हो जाती है तथा रक्त की तरलता बढ़ जाती है ये दोनों ही हृदय रोग से रक्तदाता की सुरक्षा करते हैं। नियमित रक्तदान करने से शरीर में रक्त निर्माण करने वाली अस्थिमज्जा को उद्दीपन मिलता रहता है, जिससे रक्त निर्माण भी अच्छी तरह होता रहता है।

इस मानव शरीर के संचालन और पालन के लिए जो आहार हम ग्रहण करते हैं उसी के पाचन के उपरान्त अस्थि, मांस, मज्जा आदि सप्त धातुओं का निर्माण होता है जिनमें से एक रक्त या रुधिर होता है। बिना रक्त के हमारा यह जीवन संभव नहीं है। मानव शरीर में रक्त सदैव रक्त वाहिनियों में प्रवाहित होता रहता है। अपने इसी गुण और विशिष्ट रचना के कारण रक्त हमारे शरीर में विभिन्न जैविक क्रियाओं को सम्पादित करता है।

शरीर में विभिन्न पदार्थों को रक्त अपने साथ प्रवाहित करते हुए एक अंग से दूसरे अंग तक ले जाता है इसे परिवहन या ट्रांसपोर्टेशन कहते हैं। संक्रमण एवं अन्य बीमारियों से यह शरीर की सुरक्षा करता है एवं शरीर को रोग प्रतिरोध की क्षमता प्रदान करता है। रक्त शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है इसे थर्मो रेग्युलेशन कहा जाता है। शरीर में पानी और पानी में घुले हुए विभिन्न पदार्थों की मात्रा का नियंत्रण करता है, जिससे शरीर के आंतरिक अंगों में सदैव एक निश्चित रसाकर्षण दाब बना रहे। इसे आस्मो रेग्युलेशन कहते हैं। रक्त स्राव के अवसर पर यह स्वयं जमने लगता है और थक्का (क्लॉट) बनाता है। जिससे और अधिक रक्त का नुकसान शरीर से न होने पाये। इस प्रकार स्वयं की मात्रा को नियंत्रित करता है। इसे क्लॉटिंग या कोएग्युलेशन कहते हैं।

हमारे शरीर में रक्त के निर्माण की प्रक्रिया सतत् चलती रहती है। रक्त निर्माण का यह कार्य मुख्य रूप से अस्थियों में पाई जाने वाली अस्थिमज्जा (बोन मेरो) के द्वारा किया जाता है। जो एक प्रकार का रक्त निर्माण का कारखाना है। सामान्य संतुलित भोजन से प्राप्त विभिन्न पोषक तत्वों की सहायता से

यह अस्थिमज्जा प्रतिदिन रक्त निर्माण का कार्य करती रहती है। रक्त के निर्माण में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेड, विटामिन, आयरन एवं अन्य सूक्ष्म खनिज पोषक तत्व परम आवश्यक होते हैं।

एक सामान्य स्वस्थ व्यक्ति जिसका वजन 60 से 65 किलोग्राम होता है 5 से 5.5 लीटर रक्त अपने शरीर में रखता है, वैसे देखा जाए तो यह 70 मिली लीटर प्रति किलोग्राम वजन के हिसाब से होता है। रक्ताल्पता या एनीमिया वास्तव में रक्त के आयतन की कमी नहीं होती बल्कि यह रक्त की गुणवत्ता की कमी होती हैं जिसका मुख्य कारण रक्त में हिमोग्लोबिन तत्व की कमी हो जाना है। उपरोक्त कारणों में से किसी एक के भी हो जाने पर जब ऐसी स्थिति निर्मित हो जाए कि शरीर में रक्त अथवा रक्त के हिमोग्लोबिन में इतनी कमी आ जाए जिससे जीवन की सामान्य क्रियाएं प्रभावित होने लगें और किसी भी अन्य प्रकार के इलाज के द्वारा इसे ठीक न किया जा सके तो ऐसी स्थिति में बाहर से रक्त को चढ़ाने के अलावा कोई अन्य उपाय कारगर नहीं होगा। रक्त चढ़ाने की इस प्रक्रिया को रक्ताधान या ब्लड ट्रान्सफ्यूजन कहते हैं।

जब बाहर से रक्त चढ़ाने की बात आती है और चूँकि मानव रक्त ही किसी मानव को दिया जा सकता है अतः यह तभी सम्भव है जब कोई स्वस्थ मानव स्वेच्छा से अपना रक्त देने के लिए तैयार हो। रक्त देने की इस प्रक्रिया को रक्तदान कहते हैं चूँकि रक्त देने वाला व्यक्ति अपनी इच्छा से रक्तदान करता है, अतः इसे स्वैच्छिक रक्तदान कहते हैं।

जब रक्ताधान द्वारा किसी व्यक्ति के इलाज की बात आती है तो यह जरूरी है कि उसे चढ़ाया जाने वाला रक्त पूर्ण रूप से सुरक्षित अर्थात् बीमारियों से रहित हो तथा श्रेष्ठ गुणवत्ता वाला भी हो जिससे उसका सही इलाज हो सके। जो व्यक्ति समाज के हित में और मानव सेवा को दृष्टिगत रखते हुए रक्तदान करते हैं, प्रायः वे स्वस्थ और अच्छे आचरण वाले होते हैं। इस प्रकार स्वैच्छिक रक्तदाताओं में संक्रमण व अन्य बीमारियों की संभावना अत्यन्त कम होती है। इसीलिए स्वैच्छिक रक्तदान से प्राप्त रक्त प्रायः सुरक्षित और श्रेष्ठ गुणवत्ता वाला होता है क्योंकि ऐसे रक्तदाता को बार-बार मजबूरी में रक्त नहीं देना पड़ता। आदर्श स्थिति वही कहलाती है, जब शत-प्रतिशत रक्त स्वैच्छिक रक्तदान के द्वारा प्राप्त किया जा सके।

रक्तदान से बढ़कर कोई दान नहीं है। हर किसी को वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य ही रक्तदान करना चाहिए। अगर ऐसा हो जाए तो दुनिया में कोई भी व्यक्ति रक्त के अभाव में प्राण त्यागने को विवश नहीं होगा।

सन्त निरंकारी मिशन में रक्तदान का आदर्श स्वरूप देखने को मिलता है, जहां रक्तदान करके भक्त नितान्त खुशी महसूस करते हैं कि मानव जीवन बचाने के लिए उनका शरीर काम आ रहा है। संस्था जो रक्तदान के द्वारा रक्त संग्रहित करती है और फिर उनकी जाँच करके आवश्यकतानुसार चिकित्सालय के मरीजों को रक्त उपलब्ध कराती है ब्लड बैंक, रक्त कोष या ब्लड ट्रान्सफ्यूजन सेंटर कहलाती है। जहां संग्रहित रक्त का उपयोग चिकित्सालय में निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जाता है -

दुर्घटना के शिकार लोगों में रक्तस्राव के कारण हुए रक्त के नुकसान की प्रतिपूर्ति में, गर्भवती माताओं में एनीमिया के इलाज में, आर.एच. निगेटिव माताओं के नवजात शिशुओं के इलाज के लिए, विभिन्न शल्य क्रियाओं में होने वाले रक्त के नुकसान की प्रतिपूर्ति के लिए और लम्बी अवधि तक चलने वाली शल्य क्रियाओं का सुगम और सुरक्षित बनाने के लिए। इसके अतिरिक्त प्रसव पूर्व एवं प्रसव के बाद होने वाले अत्याधिक रक्तस्राव से सुरक्षा के लिए, रक्ताल्पता (एनीमिया) के इलाज में, आए दिन होने वाले आतंकवादी एवं मारपीट की घटनाओं से पीड़ित व्यक्तियों के इलाज में तथा बर्न रोगियों के उपचार इत्यादि में रक्तदाता द्वारा दिए गए रक्त का उपयोग किया जाता है।

कुछ सज्जन रक्तदान हेतु यह कहकर संकोच करते हैं कि हमने कभी रक्तदान नहीं किया या हमारे अन्दर तो खून ही नहीं है। ऐसी धारणाएं गलत हैं। इन धारणाओं से निजात पाने का एक ही हल है कि जहां कहीं भी रक्तदान शिविर का आयोजन हो रहा हो, उन स्थानों पर जाकर हम उपर्युक्त धारणाओं से मुक्ति पा सकते हैं।

गीत माधुर्य

❁ विजय-बाबू (दिल्ली)

मिशन पे जीवन वारा, न सानी कोई तुम्हारा।
बाबा गुरुबचन आप को, सजदा हमारा।

आप के कन्धों पर, जब से मिशन का आया भार।
राजमाता जी को संग ले, खूब किया प्रचार।
लाखों का जनम संवारा, बाँटा ये ज्ञान उजियारा, बाबा गुरबचन...

नशा करे न कोई भी, ये भी दिया उपदेश।
सादा शादियां कीजिये, सुनो ये बात विशेष।
बेटियां सुखी रहेंगी, जहां जायेंगे कहेंगी, बाबा गुरबचन...

सबके बेटे बेटियां, पढ़ें बनें गुणवान।
कालेज और स्कूल भी खोल गए दयावान।
जाति पांति से उभारा, दिया गिरतों को सहारा, बाबा गुरबचन...

कई लोगों को आपकी समझ न आई बात।
चमकते सूरज को रोका, करनी चाही रात।
'विजय-बाबू' सच्चाई, रोकें न रुकी है भाई, बाबा गुरबचन...
तर्ज : बड़ा बेदर्द जहां है...

❁ मंजु भाम्मरी 'विमल' (दिल्ली)

कुरबानी गुरबचन की इतिहास बन गई है।
यादें तेरे जीवन की एहसास बन गई हैं।

तू देवता अमन का, तू शान्ति का पुजारी।
इन्सान की बिगड़ती, हालत तूने सुधारी।
ये मेहरबानी तेरी, मेरी आस बन गई है, यादें तेरे...

जुल्मी जमाने तूने, जिसको सुला दिया है।
सोने से पहले उसने, सबको जगा दिया है।
सन्तों की इस जमी पे ये बात बन गई है, यादें तेरे...

सह के मुसीबतों को, आसान जिन्दगी दी।
मुश्किल मिटा दी सारी, आसान बंदगी दी।
तेरे जैसी जिन्दगी हो, ये फरियाद बन गई है, यादें तेरे...

राहे अमन पे चलना, तूने सिखाया हमको।
सन्तों के जैसा शीतल, तूने बनाया हमको।
खामोशी अब 'विमल' की आवाज बन गई है, यादें तेरे...

❁ मुलक राज 'आकाश' (गाजियाबाद, उ.प्र.)

गुरबचन गुरबचन तुमको लाखो नमन।
तुमने अपने लहू से ये सींचा मिशन

बिन दहेज करें हम सभी शादियां।
चाहते थे तुम ना हो बरबादियां।
ना दिखावा करें कर्ज़ से मुक्त हों,
तेरी तालीम और तेरा हर कर्म
अपने जीवन में अपनायें हम तेरा हर वचन, गुरबचन...

चाहते थे कि तुम नफ़रत ना पले।
हर दिल में रहे प्यार के सिलसिले।
कोई घर नशे से ना बरबाद हो।
एक बन के रहें नेक बन के रहें हम,
तुमने चाहा सदा ये ही गुरबचन, गुरबचन...

गुरबचन राजमां का सपना यही।
सारे इन्सान चैनो अमन से रहें।
ना कहीं वैर हो ना कोई गैर हो।
ना कहीं भी लहू आदमी का बहे।
प्यार की 'आकाश' गंगा सबके दिलों में बहे,
और छाया रहे घर घर में अमन, गुरबचन...

मानव एकता का स्वरूप

❁ **शंकर दास निरंकारी** (जयपुर, राजस्थान)

यह सत्य है कि निरंकार प्रभु एक है और इसकी बनाई हुई रचना भी एक ही है। संसार में जितने भी मानव हैं, उन सभी के शरीर पांच तत्वों से बने हुए हैं और एक समान लगते हैं, लेकिन इसके बावजूद भी मानव में एकता दिखाई नहीं देती। संसार में भीड़ बढ़ रही है लेकिन लोग अकेले होते जा रहे हैं। घर बड़े हो रहे हैं और परिवार छोटे हो रहे हैं, बिखर रहे हैं। संसार में जनसंख्या बढ़ रही है लेकिन मानवीय मूल्यों में कमी हो रही है। तकनीकी का गलत इस्तेमाल हो रहा है। लोग महान बनने की चाहत में इन्सान बनना ही भूल रहे हैं। भौतिक समस्याओं के समाधान के लिए तो लोग एकजुट हो जाते हैं लेकिन समाधान होते ही यह एकता बिखर जाती है।

आज संकल्पवान लोग, जिनकी मानवता में दृढ़ आस्था है, मानव की विचारधारा को बदल सकते हैं। मानवता की भलाई के लिए मानव एकता की जरूरत है क्योंकि बिना एकता के मानव का कोई अस्तित्व ही नहीं है। मानव मानव के बीच प्यार होना चाहिए, प्यार की गैर मौजूदगी ही नफ़रत को जन्म देती है। आदमी के शब्द ऐसे होते हैं जिसकी वजह से आदमी या तो दिल में उतर जाता है या फिर दिल से उतर जाता है।

मानव को यह जीवन अमन, एकता और शान्ति पूर्ण सह-अस्तित्व के लिए मिला है लेकिन लोग इसे व्यर्थ की सोच-विचार और दूसरों को नीचा दिखाने में ही गुजार देते हैं। संसार की तमाम उपलब्धियां व्यर्थ हैं यदि इनका इस्तेमाल किसी को नीचा दिखाने के लिए किया जा रहा है। बिखराव के तो लाख बहाने मिल जायेंगे लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर एकता के नये अवसर ढूंढ़ें।

इस जगत में इतनी मूल्यवान कोई भी वस्तु नहीं है जिसके लिए मानव को मानव से बांटा जाये। मानव, मानव के बीच भेद किया जाये। हर मानव शक्ल-सूरत से मानव ही नजर आता है लेकिन इसके बावजूद उसे मानव बनने की प्रेरणा दी जाती है। मानव का अस्तित्व मानव एकता के कारण ही बचा हुआ है। मानव होने की पहचान, अपने सत्य आचरण, चरित्र और सद्व्यवहार से होती है। ये मानवीय गुण प्रीत, प्यार, नम्रता, सहनशीलता, धैर्य, विनम्रता, त्याग, क्षमा, परोपकार, दया, करुणा, मानव सेवा, सहिष्णुता, आपसी भाईचारा तथा समदृष्टि इत्यादि हैं जो मानव एकता लाते हैं।

हमारा जीवन एक-दूसरे पर निर्भर है इसलिए हम एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जुड़े रहकर ही जीवन का आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। धर्म हमें जोड़ता है और आपस में प्यार से रहना सिखाता है। निरंकारी बाबा जी ने कहा - 'धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं।' आज विज्ञान और तकनीकी से हमारा भौतिक जीवन सहज और सरल हो गया है। विज्ञान के कारण आवागमन में लगने वाला समय और दूरियां समाप्त हो गई हैं। इसी तरह ब्रह्मज्ञान से दिलों की दूरियां समाप्त हो रही हैं। सारी सृष्टि ही मानव एकता की मजबूत आधारशिला पर टिकी हुई है और मानव एकता ही मानव की उच्चतम अवस्था है।

मानव एकता के प्रबल पक्षधर युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने कहा था कि- ''निरंकारी मिशन की निगाह में मानव सत्य निरंकार प्रभु की सबसे सुन्दर अभिव्यक्ति है। चाहे वह कहीं का भी रहने वाला हो, कैसी भी वेशभूषा, बोली-भाषा बोलने वाला हो। कोई भी संस्कृति अपनाने वाला हो। निरंकारी सत्संग और सन्त समागम भी केवल मानव बनने की ही प्रेरणा देते हैं। मानव जीवन जीने का सबसे सुन्दर सलीका सिखाते हैं। यह मानवता की गंध हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। इन चिरागों के अपने घर नहीं होते हैं, ये जहां जाते हैं वहीं रोशनी बिखेर देते हैं। यह रब के आशिकों की दुनिया है। यहां सवेरा सूरज की रोशनी से नहीं सत्य के दीदार से होता है।''

निरंकारी मिशन मानव को मानव से जोड़ता है और आवागमन के बन्धन से मुक्त कराता है। यहां मानव एकता एक सार्थक कदम है जिससे सभी लोग खुशी-खुशी एक साथ रहते हैं। यह मानव एकता पूर्ण सद्गुरु की सिखलाई है और सद्गुरु के अथक प्रयासों का परिणाम है।

सब आपस में मिलकर प्यार से रहें

इंसान का फर्ज़ है कि सब आपस में मिलकर बैठें, एक-दूसरे के साथ प्यार-मुहब्बत से रहें। भगवान ने सभी को इंसान ही बनाकर भेजा है। भगवान ने हमें अलग-अलग जाति या मज़हब के रूप में नहीं भेजा। अगर भगवान हमें इस प्रकार भेजता तो हमारे शरीर पर कोई न कोई निशान लगाकर भेजता जिससे यह मालूम होता कि यह हिन्दू है, यह मुसलमान है, यह सिख है या यह ईसाई है। परमात्मा ने हमारी केवल एक ही जाति बनाई है और वह है मनुष्य। लेकिन इंसान जब अपनी असलियत से, इंसानियत से गिर जाता है तो इसका कर्म भी पशुओं जैसा बन जाता है। यह अपने कर्मों को भूल जाता है, अपने मार्ग से भटक जाता है। जितने भी पूर्ण महात्मा संसार में आये उन्होंने इन्सान को इन्सान के साथ जोड़ा, कभी अलग नहीं किया। महात्माओं ने यही सन्देश दिया कि धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं। महात्मा शांत और सजग रहता है, जो भी इनके नजदीक आता है उसे अपनी मीठी बाणी से शीतल कर देता है और उन्हें मिल-जुलकर रहने की शिक्षा देता है।

– ममतामयी निरंकारी राजमाता जी

चेतना का स्वरूप

❁ **कृष्णा खट्टर** (चीका, हरियाणा)

प्रकृति के पांच तत्व और उनसे बने शरीर के बारे में विज्ञान, और आयुर्वेद इत्यादि ने बहुत से तथ्य प्रस्तुत किए है और उनसे सच्चाई भी है। पांच तत्वों और उनसे बने शरीर में बहुत गहरा संबंध है। धरती, अग्नि, वायु, आकाश, पानी इन सबका मर्यादित रूप इस संसार, जीव-जन्तु, वनस्पति के लिए जीवनदायी है और इन सबका या किसी एक का भी अमर्यादित रूप, असंतुलित स्वभाव विनाशकारी हो जाता है, तबाही ला सकता है। यह असंतुलन ही भूकंप, सुनामी या बाढ़ आदि के रूप में सामने आता है। इसी प्रकार मनुष्य का शरीर है जो इन्हीं पांच तत्वों से बना है जाहिर है इनका असंतुलन मनुष्य की सेहत के लिए या उसके तन, मन, धन से जुड़ी किसी भी मुश्किल के लिए जिम्मेदार होता है। ऐसा तब तक होता रहता है जब तक कि मनुष्य चेतना *(conciousness)* यानि छठे तत्व से रू-ब-रू नहीं होती। चाहे हम इस प्रकृति की इस दुनिया की इस ब्रह्माण्ड की कितनी भी जानकारी प्राप्त कर लें लेकिन चेतना शक्ति के बिना ये अधूरा सच है। ये सारी जानकारियां सिक्के का एक पहलू हैं, तस्वीर का एक रुख है। जब तक हम तस्वीर के दोनों रुखों से अवगत नहीं होते तब तक हम अधूरे सच के साथ जीते हैं। सिक्के के दूसरे पहलू की बात करें तो वो यही है कि इस ब्रह्माण्ड का रचयिता कौन है, ये पाँच तत्व किसमें समाये हुए हैं इन सबको संभालने में किसका हाथ है या पाँच तत्वों से बने मनुष्य का असली ठिकाना क्या है? इसका मूल रूप क्या है, वो कहां से आया है और उसे कहां जाना है? जब तक हमारी चेतना जाग्रत नहीं होती तब तक हम अपने आपसे अनजान बने रहेंगे। चेतना द्वारा ही हम आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध को जान सकते हैं कि ये हमारी आत्मा प्रभु-परमात्मा का ही अंश है। सभी मनुष्यों में इस प्रभु का अंश, इसी का नूर है-

इक्को नूर है सभदे अंदर नर है चाहे नारी ए।
ब्राह्मण खतरी वैश्य हरिजन इक दी खलकत सारी ए।

चेतना के बोध के अभाव में ही मनुष्य नफ़रत, वैर, विरोध, काम, क्रोध या ऐसी न जाने कितनी बुराईयों का शिकार हो जाता है। चेतना के अभाव में मनुष्य बिना लगाम के घोड़े की तरह है जो न जाने किस दिशा में मुड़ जाए और सवार अपने असली मकसद से, मंजिल से बिछुड़ जाए।

चेतना ही मनुष्य को खुद से मिलवा सकती है और जब हम खुद को जान लेते हैं तो खुदा को जान लेते हैं। खुदा को जान लिया तो खुदाई को पा लेते हैं। आज चेतना की मनुष्य को सबसे ज्यादा आवश्यकता है क्योंकि किसी वस्तु की कमी होना ही उसकी सबसे ज्यादा जरूरत का कारण बन जाती है। बिना चेतना के मनुष्य किसी और का तो क्या खुद का भी भला नहीं कर सकता है। चेतना ही उसे नाम और नामी का, कुदरत और

कादर का, आत्मा और परमात्मा का संबंध दिखा सकती है।

पाँच तत्वों को तो इन्सान भली-भांति देख सकता है, जान सकता है और उनकी कमी या अधिकता को अपने शरीर में महसूस कर सकता है, अपनी बुद्धि द्वारा समझ सकता है लेकिन यह समझना होगा कि चेतना को वो कैसे जाग्रत कर सकता है? ये सच है कि हम अपनी बल, बुद्धि द्वारा इस जीवन का निर्वाह तो कर सकते हैं लेकिन चेतना के बिना हम आत्मा को पोषित नहीं कर सकते। चेतना को जाग्रत करने का एकमात्र साधन सद्गुरु है। जब तक हम सद्गुरु की शरण में नहीं जाते, ब्रह्मज्ञान की अनमोल दात को धारण नहीं करते तब तक हमारी चेतना जाग्रत अवस्था में नहीं आ सकती। यानि सद्गुरु का मिलन ही हमारी चेतना को जगा सकता है। सद्गुरु ही ब्रह्मज्ञान द्वारा हमें इस निरंकार से रू-ब-रू करवा सकता है। निरंकार को पाकर ही हम अपने मूल को जान सकते हैं। सद्गुरु का मिलना चेतना का जाग्रत होना है। अंधेरे और उजाले का अंतर समझना, फिर समझ में आता है कि हम तो इतने वर्षों में अंधेरे को ढो रहे थे। सद्गुरु द्वारा ब्रह्मज्ञान को पाना हमें भाग्यशाली मनुष्य से सौभाग्यशाली बना देता है और जब सद्गुरु की सिखलाई जीवन में, कर्म में शामिल हो जाती है तो मनुष्य परम सौभाग्यशाली बन जाता है। इसी प्रकार सत्संग, सेवा, सुमिरण द्वारा हम अपनी खुशी को आनन्द में बदल सकते हैं और जब सत्संग, सेवा, सुमिरण हमारे जीवन में प्रवेश कर जाए तो वही आनन्द परम आनन्द का रूप ले लेता है। ऐसे ही आत्मा सद्गुरु के बताये हुए मार्ग पर चलती जाती है और परम आत्मा में विलीन होकर परमात्मा में समा जाती है, परम आत्मा का अंश बन जाती है -

जोत अमर जोती विच मिल के अमर जोत बण जांदी ए।
कहे अवतार बूंद मिल सागर सागर ही अखवांदी ए।

आज समय के सद्गुरु माता सुदीक्षा जी भी वार्षिक सन्त समागमों द्वारा, बाल समागमों द्वारा, महिला समागमों द्वारा या NYS समागम द्वारा यही संदेश दे रही हैं। समागम का रूप कोई भी हो संदेश केवल और केवल यही है कि हर मनुष्य, मनुष्य होने का अपना मूल मकसद जान सके।

ऐसा नहीं है कि ब्रह्मज्ञान लेते ही हमारा काम खत्म हो गया है बल्कि काम और भी ज्यादा बढ़ गया है। भाव चेतना के साथ एक-एक कदम चलना अनिवार्य है क्योंकि अगला कदम सौभाग्यशाली से परम सौभाग्यशाली होना या परम आनन्द की अवस्था को पाना या परम आत्मा के स्तर तक पहुंचना अभी बाकी है इसलिए ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों को और भी ज्यादा चेतना के साथ जीवन जीने की जरूरत है ताकि वे परम सौभाग्यशाली, परम आनन्द की स्थिति को पा सके।

तुम्हें रिझाने का हुनर सीख पाऊं सतगुर।
कुछ कर्म ऐसा करूं कि तेरे भक्तों में शुमार हो जाऊँ सतगुर।

आशीर्वाद

❁ सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

पिछले कुछ दिनों से कोरोना वायरस के चलते सरकार ने स्वास्थ्य संबंधी कुछ सावधानियां बरतने को कहा है। आप महापुरुष चेतन हैं और एक विश्व नागरिक होने के नाते अपनी जिम्मेदारी से अवगत हैं। सेवा, सुमिरण, सत्संग महापुरुषों के जीवन का आधार रहा है लेकिन हमें संगतें, टूर प्रोग्राम और समागम रद्द करने पड़े हैं। ऐसे में मन में बेचैनी होना स्वाभाविक है कि हम सत्संग नहीं कर पा रहे हैं। दातार सबका सेवा, सुमिरण, सत्संग के प्रति यह जो खिंचाव और जज़्बा है उसे कायम रखे। ऐसे में हम अपनी एक नागरिक वाली जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ घर-परिवार में ही सुमिरण करके और निरंकार प्रभु की महिमा गाकर इस निरंकार से जुड़े रह सकते हैं। जैसे ही परिस्थितियां सामान्य होंगी, हम विशाल रूप में सत्संग का आनन्द ले सकेंगे।

सत्संग को लेकर यह जो एक खालीपन सा महसूस हो रहा है उसको भी एक आशीर्वाद के रूप में लें और ये जो समय हमें घरों में मिल रहा है इसका सदुपयोग करें और हमारी जो अनेकों पुस्तकें हैं, सम्पूर्ण अवतार बाणी और सम्पूर्ण हरदेव बाणी है या और भी जो मिशन का साहित्य है, उसको पढ़ने में अपना समय लगायें। मिशन की वेबसाइट किड्स डिवाइन, न्यूज डिवाइन, वॉइस डिवाइन के अनेक रूप हैं तो घर पर बैठे-बैठे इसका लाभ ले सकते हैं। स्वयं को निरंकार से जोड़े रखें। दातार सभी पर कृपा करें, सभी स्वस्थ रहें और परिवार वालों के साथ घर में बैठकर इस निरंकार प्रभु से अपना रिश्ता मजबूत करें। अपने अन्दर जो खामियां हैं उनको दूर करके कैसे दूसरों से प्यार कर सकते हैं, इस ओर मन को लगायें। अपना जज़्बा ऊंचा रखें। दातार कृपा करे कि जल्द ही यह स्थिति ठीक हो और सभी नियमित जीवन जीते हुये अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सेवा, सुमिरण, सत्संग का आधार लेकर कर सकें।

धर्म
प्यार और एकता सिखाता है

संसार में परमात्मा एक ही है। इस एक रचनहार प्रभु ने रचना को चलाने के लिए अलग-अलग गुण स्वभाव और रुचियों को बनाया। परमात्मा की विभिन्नता में बनाई गई इस रचना को एक करने का ख्याल बेमायने हैं। जरूरत इस बात की नहीं है कि विभिन्न प्रकार के लोग एक हो जाएं, बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि उनमें आपसी तालमेल, मिलवर्तन और सहन करने व समझने की शक्ति बढ़े। किसी पर विचार थोपने से उसका विकास रुक जाएगा और उसमें बदले की भावना जन्म लेगी जो अवश्य ही नफ़रत का कारण बनेगी। मिल-जुलकर विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने से इन्सान की तरक्की होगी, मिलवर्तन और एकता बढ़ेगी। ईश्वर सबका सांझा है, यह केवल किसी खास धर्म या फिरके का नहीं है। भगवान की कोई जाति-बिरादरी नहीं है। भगवान किसी खास धर्म या जाति के नहीं होते, असल में धर्म किसी को वैर, नफ़रत की बातें नहीं सिखाता। धर्म हमें किसी से जोड़ता नहीं बल्कि इन्सान को इन्सान के साथ जोड़ता है। धर्म हमें प्रीत-प्यार, नम्रता और एकता सिखाता है। इन्सान को इन्सान के करीब लाकर मिशन इसी तरह मानव एकता ला रहा है।

- युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी

हम गुरसिख बन पाएं

अपने अहम् भाव अथवा अपने अस्तित्व को न चितारते हुये गुरु की सेवा में सबके साथ मिल-जुलकर आगे से आगे बढ़ते जाना है। यह हमेशा याद रहे कि सबसे बड़ी पदवी गुरसिख की होती है जो हर समय भिन्न-भिन्न रूप में सेवा करते हैं।

❁ अमरीक सिंह आई.ए.एस. (सेनि.), (दिल्ली)

हम सब सद्गुरु के शिष्य हैं, सेवादार हैं, हमें अपने पद-पदवियों का ध्यान न करते हुये एक सेवादार के रूप में सत्य की आवाज को आगे से आगे फैलाना है और इसमें तन-मन-धन का भरपूर योगदान देना है। अपने अहम् भाव अथवा अपने अस्तित्व को न चितारते हुये गुरु की सेवा में सबके साथ मिल-जुलकर आगे से आगे बढ़ते जाना है। सबसे बड़ी पदवी गुरसिख की होती है जो हर समय भिन्न-भिन्न रूप में सेवा करते हैं। गुरु भक्ति में सत्संग और सुमिरण के अतिरिक्त सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरु के सेवक सेवादार बनकर गुरु के हर वचन की पालना करते हैं एवं हंसी-खुशी पूर्णतया गुरु के वचन को मानकर सद्गुरु का आशीर्वाद व खुशियां प्राप्त करते हैं। सम्पूर्ण अवतार बाणी में शहनशाह जी ने लिखा है -

सिख गुरु दा दम दम पल पल दास ही बण के रहन्दा ए।
ओहो कार कमावे गुरसिख जो कुझ सत्गुर कहन्दा ए।

सेवक को भक्ति-मार्ग में आगे ले जाने वाली केवल सेवा ही होती है जो तन-मन और धन से की जाती है। सेवा करते हुये गुरसिख निष्काम होता है -

गुरसिख नूं नहीं इच्छा फल दी कर्म सदा निष्काम करे।
कहे अवतार ऐसे गुरसिख दा सत्गुर रोशन नाम करे।

गुरसिख गुरु दर पर सेवा करते हुये अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है, अपना अस्तित्व मिटा देता है। भाव यह है कि वह सद्गुरु को सब कुछ करने वाला कर्ता मानता है और उसे ही प्राथमिकता देता है। गुरसिख गुरु के हुक्म की पालना करता है और उनके बताये मार्गदर्शन के अनुसार जीवन जीता है, कोई भी परिस्थिति हो वह अपनी प्रीत हमेशा निभाता है। सम्पूर्ण अवतार बाणी में लिखा है कि -

गुरसिखां तों मैं बलिहारी जिन्हां प्रीत निभाई ए।
गुरसिखां तों मैं बलिहारी जिन्हां खुदी मिटाई ए।

गुरसिख गुरु का वचन पूर्णतया मानता है और कभी अपनी अक्ल-स्याणप को आगे नहीं रखता है। वह सद्गुरु के बताये उपदेश को सत्-सत् करके मानता है। सद्गुरु के कहे अनुसार ही जीवन जीता है और कभी अपने आपको कर्ता नहीं मानता है, सदा दास ही बनकर रहता है। गुरसिख सद्गुरु को अपने प्राणों से ज्यादा प्यार करता है और उसे ही सर्वश्रेष्ठ मानता है। वह सद्गुरु का आसरा लेकर ही सब कार्य करता है और प्यार-नम्रता को ही जीवन में अपनाता है। सद्गुरु फरमाते हैं -

जिस गुरसिख नूं निवणा भुल्ले उथे गुरु खलोणा नहीं।
कहे अवतार ऐहो जहे सिख दे नाल गुरु ने होणा नहीं।

गुरसिख सद्गुरु से ब्रह्मज्ञान पाकर अपने आपको सौभाग्यशाली मानता है और किसी प्रकार के अभिमान में नहीं आता है। गुरसिख की जुबान पर गुरु की उपमा होती है और वह सदैव ही सद्गुरु की महिमा का गायन करके सुख और खुशी प्राप्त करता है। उसके दिल में गुरु का ज्ञान समाया रहता है और वह हर समय अपना जीवन परोपकार में लगाता है। बाबा अवतार सिंह जी ने गुरसिख की परिभाषा को इस प्रकार स्पष्ट किया है -

गुरसिख है ओह पूरे गुर तों अंग संग रब नूं जाणे जो।
नीवां हो के हौमे छड्डे सच्चा राह पछाणे जो।

गुरसिख सदा नम्रता में रहता है और अहंकार को त्यागकर, सत्य की राह को अपनाता है। उसे जो कुछ उपलब्ध हो वह उसे खुशी से स्वीकार करता है और जीवन भर भाणे में रहता है। वह सदा नेकियां कमाता है और परोपकार करता है। अपना नहीं वह सबका भला करता है। दूसरों को सुख पहुंचाना और परोपकार करना ही उसके जीवन का ध्येय होता है। प्यार, नम्रता, मीठी वाणी और सदाचार उसके जीवन का अंग बन जाते हैं। वह जीवन में सेवा, सुमिरण, सत्संग को अपनाता है। हर समय, हर पल, हर जगह उसकी एक ही अवस्था होती है, वह गुरु को समीप देखता है। वह उनकी दी हुई शिक्षा के अनुसार कार्य करता है। फलस्वरूप उसका जीवन सुखमयी और भक्ति से भरपूर बनता है, वह औरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनता है।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज चाहते हैं कि हम सच्चे गुरसिख बनें और हमारे जीवन से गुरमति की खुशबू सबको देखने को मिले। सद्गुरु हम सबको ऐसी बुद्धि दें कि हम उनके मार्गदर्शन के अनुसार जीवन व्यतीत करें और सद्गुरु की रहमतों के पात्र बनें।

लोकगीत

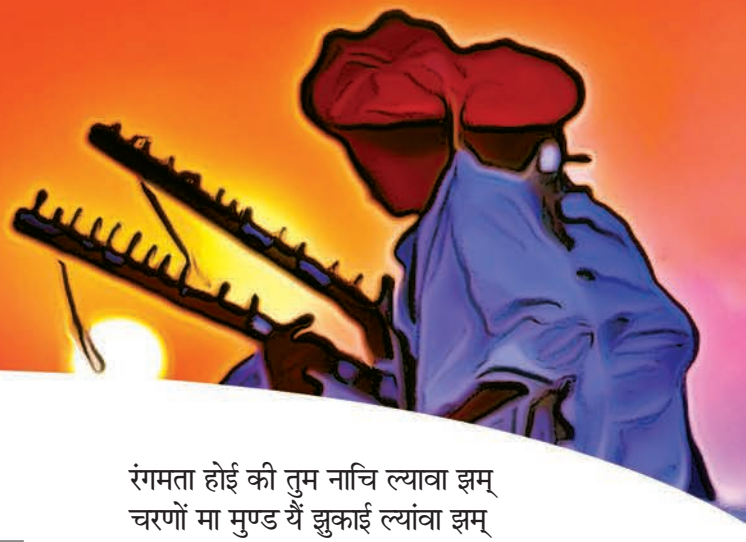

भोजपुरी

❁ **मुखलाल 'पावन'** (गाजियाबाद, उ.प्र.)

बसें घट-घट में अमर सजनवां,
कि जिया बोले तूही-2 हो।
खेल निरंकार के बा हर युग निशानी।
पीर पैग़म्बर परगट धरती हर्षानी।
बाजे प्रेम बंशी शामों बिहनवां, कि जिया बोले ...
उहे ज्ञान उहे ध्यान मन के मनायला।
प्रीत प्यार नम्रता में मन के रंगायला।
गूँजे जन-जन में तूही तू तरनवां, कि जिया बोले...
युग परिवरतन बिधि क बिधान हो।
सेवा संगत सुमिरन में लागल रहे ध्यान हो।
ज्ञान सतगुरू बा मीलल बरदनवां, कि जिया बोले...
सतगुरू सुदीक्षा माता रूप अनमोल बा।
शुकर 'मुखलाल पावन' बचन अनमोल बा।
होला ए ही दर सब कर कल्यनवां, कि जिया बोले...

तर्ज : मन के पंक्षी उड़े असमनवां...

गढ़वाली

❁ **सुल्तान सिंह निरंकारी** (नैनीताल, उत्तराखण्ड)

गुरु सत्संग मा तुम आई जावा चम्
बगछट्ट होई की तुम नाचि ल्यावा झम्
निरंकारी सत्संग मा तुम आई जावा चम्
ज्ञान कु उज्यालू मा तुम गाई ल्यावा झम्
गुरु सत्संग मा...
आऽऽ त्यारा चरणों मा मिल अपुणु दिल लगाई-2
दगड़मा सन्तों का मिल मन बसाई,
रंगमता होई की तुम नाचि ल्यावा झम्
चरणों मा मुण्ड यैं झुकाई ल्यांवा झम्
गुरु सत्संग मा...
चौरासी का फेरो से तिल हमथै बचाई,
ज्ञान कू उज्यालू तिल हमथै दिखाई,
'सुल्तान सिंह' त्यारा चरणों मा आई ग्याई झम्
गीत सतगुरु का लगाई ल्यावां झम्
गुरु सत्संग मा...

तर्ज : जरा ठण्डु चलो ढी, जरा मठु चलो ढी...

राजस्थानी

❁ **कैलाश**

थारी शरणी आयो सत्गरु अरज सुणो म्हारी।
अर्न्तयामी थे छो सत्गुरु मन की जाणो सारी।
दुनिया ने तारण खातर थे जग में आया।
मिशन चलायो निरंकारी थांसु प्यार पाया।
थारी प्रितड़ली फैली जग में, आज तो सारी,
थारी शरणी आयो...
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई दर थारे आवे।
जस गावे बे थारो माता मन में हरसावे।
दुनिया री बाता अब तो म्हाने, लागे घणी खारी,
थारी शरणी आयो...
दूर करो थे दुखड़ा बीका जो थाने ध्यावे।
खूब देवो थे बाने सत्गुरु कदै कमी ना आवे।
कुण जाने सत्गुरु लीला थारी या घणी न्यारी,
थारी शरणी आयो...
सेवा सत्संग सुमिरन में तो ध्यान म्हारो कीजे।
थारा 'कैलाश' हिवड़ा बसाजे दूर मत कीजे।
सन्ता र सागे हर जस गाऊ, सुणज्यो बिनती म्हारी,
थारी शरणी आयो...

तर्ज : कोरा कागज

धर्म आपस में वैर करना नहीं सिखाता, सच्चे धर्म की सच्ची शिक्षा तो यही है कि हर मानव एक-दूसरे से प्यार करे। एक-दूसरे का सत्कार करे, उसके काम आए। अगर इन्सान परमात्मा को निकट देखे, निकट माने तो वह मानव के भी निकट रहेगा, एकता वाले भाव में रहेगा। सच्चा धर्म नफ़रत नहीं केवल प्यार करना सिखाता है।

सच्चा धर्म

❁ **जोगिन्दर मनचंदा** (गुरुग्राम, हरियाणा)

एक अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन में अनेक धर्मों की प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विराम के समय पत्रकार उनमें से एक धार्मिक प्रतिनिधि से बातचीत करने लगा। पत्रकार को एक शरारत सूझी, उसने पूछा कि इतने धर्मों में आस्था रखने वाले लोग यहां एकत्रित हैं, आप बताएं कि इनमें सबसे अच्छा और सच्चा धर्म कौन सा है। उसके मन में यह ध्यान था कि वह निश्चय ही अपने धर्म को उत्तम बताएगा और अपनी बात मनवाने का प्रयास करेगा, फिर मैं इसे अपने प्रश्नों के जाल में फंसा लूंगा।

परन्तु उस पत्रकार की सोच के विपरीत, उस सज्जन ने कहा कि मैं आपको दो निर्णायक तथ्य बताता हूं जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो धर्म इन दोनों तथ्यों पर सही उतरता है वही धर्म उत्तम है। पहला तथ्य यह कि वह धर्म उत्तम है जो इन्सान और परमात्मा के बीच की दूरी समाप्त कर दे और दूसरा तथ्य यह कि वह इन्सान और इन्सान के बीच की दूरी को समाप्त कर दे। अब इसका निर्णय मैं आप पर छोड़ता हूं कि आप सब धर्मों के प्रतिनिधियों को सुनें तथा अपना निर्णय स्वयं करें।

इस घटना को ध्यान में रखते हुए हम आज के दौर में सन्त निरंकारी मिशन की तुलना इन दोनों तथ्यों के आधार पर करते हैं तो पाते हैं कि यह दोनों ही बातें हमारे जीवन में उतारने का प्रयास सन्त निरंकारी मिशन कर रहा है।

पिछले दिनों सद्गुरु माता सुदीक्षा जी ने सन्त निरंकारी मिशन के 90 वर्षों का जिक्र करते हुए कहा कि- निरंकारी मिशन= ब्रह्मज्ञान। आज निरंकारी मिशन से जुड़ा हुआ हर भाई, बहन, बच्चा, बुजुर्ग यह बात कहता है कि हमने परमात्मा का दर्शन किया है और यह हमारे नजदीक है। एक उदाहरण द्वारा यह बात सिद्ध होती है कि निरंकारी मिशन से जुड़े हुए परिवारों के बच्चों को भी पता है कि परमात्मा-निरंकार कितना नजदीक है। उदाहरण के लिए एक निरंकारी परिवार में उनका पांच वर्ष का बच्चा जब स्कूल से घर आया तो परिवार ने पूछा कि आज क्या नया सीखा तो बच्चे ने बताया कि This (यहां) और That (वहां) का प्रयोग सिखाया गया। तब परिवार ने कुछ वस्तुओं के बारे में पूछा जो नजदीक या दूर रखी थीं। बच्चे ने ठीक-ठीक उत्तर दे दिया। परिवार के एक सदस्य ने अचानक पूछ लिया कि परमात्मा को This या फिर That क्या कह कर संबोधित करेंगे? इस पर बच्चा चुप हो गया और कहने लगा कि

परमात्मा दूर तो है नहीं इसलिए That नहीं कह सकते। यदि किसी वस्तु को हम This कहते हैं तो हमारी उस वस्तु की कुछ तो दूरी फिर भी होती ही है, पर परमात्मा और हमारे बीच तो कोई भी दूरी नहीं है तो यह This से भी नजदीक है।

पहले भी महात्माओं ने कहा है कि आंख की पलकें आंखों से जितनी दूर हैं परमात्मा इससे भी निकट है। सन्त निरंकारी मिशन इस पहले तथ्य पर पूर्ण रूप से खरा उतरता है।

दूसरे तथ्य की तरफ यदि हम ध्यान देते हैं तो ब्रह्मज्ञान देने से पहले हम से पांच प्रण लिए जाते हैं जिसमें दूसरे प्रण में यह कहा जाता है कि हमने किसी भी व्यक्ति से उसकी जाति-पाति, वर्ण-धर्म इत्यादि के आधार पर भेद नहीं करना है, न ही किसी प्रकार के छुआछूत को मानना है। निरंकारी सत्संग में सभी जाति वर्णों के लोग मिलजुल कर एक ही स्थान पर बैठकर सत्संग करते हैं एक साथ बैठकर लंगर प्राप्त करते हैं इस प्रकार कोई भेदभाव नहीं किया जाता।

एक बार प्रचारक महात्मा एक स्थान पर सत्संग करने के लिए निकले और वहां के रेलवे स्टेशन पहुंचे। वहां जिस किसी रिक्शे वाले को वह उस स्थान पर जाने को कहते, वह वहां जाने से मना कर देता था। अन्त में एक रिक्शे वाला कुछ ज्यादा पैसे लेकर वहां इस शर्त पर जाने को तैयार हुआ कि मैं आपको वहां कुछ दूरी पर ही उतार दूंगा। रास्ते में रिक्शे वाले ने बताया कि हम उस बस्ती की तरफ नहीं जाते, न ही वहां के किसी व्यक्ति को अपने रिक्शे पर बिठाते हैं क्योंकि वहां रहने वाले लोग छोटी जाति के हैं। इसको सुनकर प्रचारक महात्मा चुप थे, उन्हें बहुत मानसिक पीड़ा महसूस हुई कि एक इन्सान दूसरे इन्सान को छोटी जाति का कह कर इतनी नफ़रत कैसे कर सकता है। सद्गुरु तो यही समझाते हैं कि -

इक्को नूर है सभ दे अन्दर नर है चाहे नारी ए।
ब्राह्मण खतरी वैश हरिजन इक दी ख़लकत सारी ए।

कुछ समय के बाद रिक्शे वाला प्रचारक महात्मा से पूछने लगा कि आप तो ऊंची जाति के लग रहे हैं, आप वहां क्यों जा रहे हैं? प्रचारक महात्मा ने कहा कि जिस जाति के लोग वहां बसते हैं मैं भी उसी जाति का हूं। हमने तो यही सीखा है कि हम सब एक ही प्रभु-परमात्मा की संतान हैं तथा आपस में भी नाता भाई-भाई वाला ही बनता है। हम लोग गुरु के ब्रह्मज्ञान द्वारा अब भाई-भाई बन चुके हैं। हमारे यहां तो सेवादल की प्रतिदिन करने वाली प्रार्थना भी यही है कि -

न हिन्दू न सिख ईसाई, न हम मुसलमान हैं।
मानवता है धर्म हमारा, हम केवल इन्सान हैं।

तो उपरोक्त सत्य घटना भी यही बताती है कि किस प्रकार सन्त निरंकारी मिशन एक सच्चे धर्म की परिभाषा को ही जीवन में अपनाने की शिक्षा दे रहा है।

आओ करें रक्तदान

❁ **अशोक सोमानी** (बैरागढ़, म.प्र.)

सतगुर माता का है ये फरमान,
आओ मिलकर करें रक्तदान।
बच जाये कोई एक जान,
आओ मिलकर करें रक्तदान।

इन्सा इन्सान के काम आये,
न लहू हम किसी का बहायें।
गुरू हरदेव का ये अरमान,
आओ मिलकर करें रक्तदान।

ये जो सेहत भरा तन हमारा,
बन जाये किसी का सहारा।
लौट आये किसी की मुस्कान,
आओ मिलकर करें रक्तदान।

धर्म ईमान वाले सब आयें,
आके खून का रिश्ता निभायें।
मेरे मिशन का है ये पैग़ाम,
आओ मिलकर करें रक्तदान।

ये जो मालिक ने जीवन दिया है,
उसपे सतगुर ने एहसां किया है।
इससे बढ़कर नहीं कोई दान,
आओ मिलकर करें रक्तदान।

तर्ज : जिन्दगी की न टूटे लड़ी...

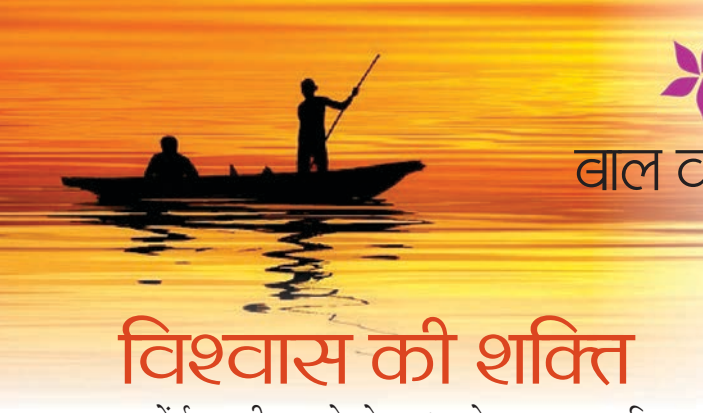

बाल वाटिका

विश्वास की शक्ति

हमें ईश्वर की कृपा से जो यह अनमोल मानव जन्म मिला है इसकी कद्र करनी है। यह जीवन केवल खाने-पीने और ऐशो-आराम के लिए नहीं मिला है बल्कि इसका उद्देश्य मानव सेवा है। मानव मानव से प्यार करे मानव सबसे अधिक मानव के काम आए इसकी आवश्यकता है। निरंकारी बाबा जी फरमाते हैं - 'मानव हो मानव को प्यारा, इक दूजे का बनें सहारा।' मानव के अन्दर यह भावना तब आती है जब उसे सद्गुरु की कृपा से अपने मूल स्वरूप की पहचान होती है। ऐसे होने पर वह विश्वासपूर्वक कह पाता है कि मानव जीवन का लक्ष्य ही स्वयं को जानना है। इससे उसका विश्वास मजबूत होता है और वह छोटी-छोटी बातों पर डांवाडोल नहीं होता। एक उदाहरण से इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

एक बार एक राजा अपनी पत्नी के साथ समुद्र की सैर कर रहा था। समुद्र की लहरों से खेलते-खेलते उसकी कश्ती किनारे से काफी दूर चली गई। अचानक समुद्र में जोर का तूफान आ गया। समुद्र की ऊंची-ऊंची लहरें अब भयानक रूप ले चुकी थीं। सैर का आनन्द तो रहा नहीं, उल्टे वह अब भयानक रूप ले चुका था और सैर का आनन्द भी समाप्त हो चुका था। लहरों का विकराल रूप देखकर ऐसा लगने लगा कि अब किनारे पर पहुंचना कठिन है। समुद्र में वहां अन्य कोई सहारा भी नहीं था।

राजा परमात्मा का भक्त था, उसे प्रभु पर पूर्ण विश्वास था लेकिन रानी के चेहरे पर घबराहट के निशान स्पष्ट नजर आ रहे थे। राजा ने रानी को धीरज दिलाने का प्रयास किया लेकिन उसका भय खत्म न हुआ। तब राजा को एक उपाय सूझा। उसने म्यान से अपनी तलवार निकाली और रानी की गर्दन के समीप लाकर बोला - ''क्या तलवार की इस तीखी धार से तुम्हें डर नहीं लग रहा?'' ''नहीं'', रानी ने मुस्कुराते हुए कहा। राजा ने कहा- ''क्यों?'' इस पर रानी ने कहा, ''आप मेरे पति हैं और पालक भी इसलिए यह तलवार जब तक मेरे पति के हाथ में है तब तक मुझे किसी प्रकार का भय नहीं है।'' राजा ने मुस्कुराते हुए कहा- ''ठीक इसी तरह परमपिता परमात्मा हम सबका पालनकर्ता और रक्षक है। यह हमारा तुम्हारा ही नहीं सारी सृष्टि का मालिक है। हम इसकी शरण में हैं। यह मेरा प्रभु तूफानों की दिशा मोड़ने में सक्षम है। यह कभी भी हमारा बुरा नहीं होने देगा।''

इस दृष्टांत से हमें यही प्रेरणा मिलती है कि हमें परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए और हमेशा अच्छे कार्य करते हुए अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। विश्वास के बारे में स्पष्ट करते हुए महात्मा कहते हैं कि-

विश्वास सब पर करो पर अन्धविश्वास न करो। पहले खुद पर विश्वास करो तब दुनिया भी आप पर विश्वास करेगी। विश्वास में अद्भुत शक्ति होती है। यदि आपको अपने ऊपर विश्वास है और कठिन परिश्रम करने का भाव है तो सफलता अवश्य मिलेगी। मनुष्य की सफलता के पीछे विश्वास का बहुत बड़ा हाथ होता है।

परमात्मा पर विश्वास परमात्मा के दर्शन करके और मजबूत होता है। सद्गुरु की कृपा से मानव को परमात्मा का ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान पाकर वह गुरु के वचनों के अनुसार कर्म करता है और परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखकर आगे बढ़ता जाता है। उसके मन से सभी भय-संशय समाप्त हो जाते हैं। वह अपना पूरा ध्यान अच्छे कर्म पर लगाता है और सफल होता है। हम सभी को माता-पिता और गुरू पर पूर्ण विश्वास रखते हुए अपना कर्म जिम्मेदारीपूर्वक करना चाहिए और विश्वास की शक्ति के सहारे आगे बढ़ना चाहिए।

प्रभु ऐसी कृपा करो

❁ **हिमांशु** (लखनऊ, उ.प्र.)

प्रभु ऐसी कृपा करो, सभी से करें हम प्यार।
हृदय हमारा विशाल हो, सभी का करें सत्कार।
तुम हो दाता जगत के विधाता।
तुम पिता हो तुम्हीं हो माता।
हम सभी का दयालु तुम जीवन दो संवार।
प्रभु ऐसी कृपा करो, सबसे करें हम प्यार।
मन में दूरी न हों मिलकर रहें हम।
जुबां से बोल मीठे कहें हम।
आपका हम सहारा लें आपका ही आधार।
प्रभु ऐसी कृपा करो, सबसे करें हम प्यार।
प्रेम करुणा से भरा मन में भाव हो।
हमें निर्मलता वाला स्वभाव दो।
जीतें हम दिल सभी का, ऐसा करें व्यवहार।
प्रभु ऐसी कृपा करो, सबसे करें हम प्यार।

विशेष सत्संग समारोह : 23 फरवरी, 2020

ब्रह्म से जुड़कर अपना बहुमूल्य जीवन संवारें

- सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

दिल्ली, 23 फरवरी। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने कहा कि सांसारिक स्थितियाँ क्षणभंगुर और परिवर्तनशील हैं, लेकिन सत्संग की शिक्षाएं रूह की खुराक हैं और ये सदैव रहने वाले निरंकार के साथ जोड़ती हैं। इनके साथ जुड़कर ही पार उतारा हो सकता है। मिशन की हमेशा यही शिक्षाएं रही हैं कि सभी ब्रह्म के साथ जुड़ते चले जायें और अपने जीवन को संवार लें। बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने भी सदा सत्संग को हर रिश्ते से ज्यादा प्राथमिकता दी। आप ग्राउंड नं. 8 में बाबा हरदेव सिंह जी के जन्म दिवस पर आयोजित विशेष सत्संग समारोह में उपस्थित

श्रद्धालुओं के विशाल जनसमूह को सम्बोधित कर रहे थे।

अपने उद्बोधन में सद्गुरु माता जी ने फरमाया कि– सब 2–3 दिनों से लगातार सेवाओं में हैं, चाहे सेवादल सिंपोजियम में या संगत के रूप में। सभी आज अस्पतालों में सफाई के लिए भी पहुँचे और सेवा के लिए स्वयं को समर्पित किया। सेवादार सत्संग में भी बढ़-चढ़कर योगदान दे रहे हैं। जो सिखलाईयां बाबा हरदेव सिंह जी ने दी थीं, उनका एक व्यावहारिक रूप आप अपने किरदार के जरिये दिखा रहे हैं। दातार कृपा करे कि सेवा का ये ज़ज्बा बढ़ता चला जाये और साथ ही साथ सभी सुमिरण व सत्संग को भी लगातार महत्व देते चले जायें।

बाबा हरदेव सिंह जी हम सबको सत्य मार्ग पर चलने की सिखलाई दिया करते थे। पारिवारिक बात करें तो संसार में पिता अपने बच्चों को सर्वाधिक प्राथमिकता देते हैं। हम भाग्यवान हैं कि पिता बाबा हरदेव सिंह जी ने सदा सत्संग को बच्चों से बढ़कर महत्व दिया। तब दासी शायद पांचवीं या छठी कक्षा में थी, तभी एक घटना ऐसी हुई कि दासी को कुछ खाने से एलर्जी हो गई। सांस उखड़ने लगी। पूरे शरीर में छोटे–छोटे दाने हो गये और शरीर सूजने लग गया।

तुरन्त डॉक्टर को घर बुलाया गया तो डॉक्टर ने दासी को जल्दी अस्पताल में दाखिल करवाने को कहा उस समय सद्गुरु बाबा जी ने माता सविन्दर जी से कहा कि बच्ची को अस्पताल लेकर जाइये। सत्संग का समय हो रहा है, दास सत्संग जा रहा है।

दुनिया में कोई भी घटना हो रही हो, कुछ भी स्थिति बन रही हो, बाबा हरदेव सिंह जी ने परिवार का बहुत ख्याल रखा पर प्राथमिकता हमेशा सत्संग को ही दी। माता सविन्दर जी दासी को अस्पताल लेकर गईं, दाखिल करवाया। दासी के पास एक घंटा बैठने के बाद उन्होंने कहा कि सत्संग समाप्त होने में एक घंटा बचा है, मैं भी सत्संग में जा रही हूँ।

उस समय भी बाबा जी और माता जी ने माँ–बाप के रूप में भी सत्संग को ही प्राथमिकता दी। दातार कृपा करे कि हर घर में यही शिक्षा कायम रहे व परिवार में भी प्रेरणा बनी रहे कि सत्संग माँ ही सबसे महत्त्वपूर्ण है।

समागम में दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र व आस-पास के शहरों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर सद्गुरु का दिव्य–दर्शन व पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। समारोह में बहन बिंदिया छाबड़ा (कार्यकारी अध्यक्षा, एस.एन.सी.एफ.), श्री पुरुषोत्तम, श्री बंटी, श्री विनोद गंधर्व, श्री सी.एल. गुलाटी, श्री हरदीप आले व साथी, श्री शम्भू मस्ताना, बहन कुसुम, श्री भाषी मुल्तानी, बहन सम्प्रीति, श्री खुशवंत सेठी आदि ने अपने भाव गीत, कविता व व्याख्यानों द्वारा व्यक्त किए। श्री राकेश मुटरेजा ने आवश्यक सूचनाएं दीं। श्री रोशन देहलवी ने मंच संचालन किया।

सुन्दर व्यवहार व समर्पित भाव से सेवा करते रहें

दिल्ली, 21 फरवरी। ग्राउंड नं. 2 दिल्ली में निरंकारी सेवादल सिम्पोजियम (NSS) का भव्य आयोजन सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के सान्निध्य में आरम्भ हुआ। सद्गुरु माता जी ने अपने कर–कमलों द्वारा ध्वजारोहण एवं शांति के प्रतीक श्वेत गुब्बारों को आसमान में छोड़ने के साथ इसका शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर सन्त निरंकारी सेवादल के समस्त सदस्यों की ओर से सन्त निरंकारी सेवादल के मेंबर इंचार्ज श्री वी. डी. नागपाल जी ने सद्गुरु माता जी का अभिनंदन फूलों का गुलदस्ता भेंट करके किया। आयोजन में सभी प्रतिभागी विभिन्न रंगों की टी–शर्ट्स पहने हुए थे। कार्यक्रम का आरम्भ सेवादल के प्रार्थना-गीत 'हे सद्गुरु, हे भगवान...' से हुआ। इसके बाद निरंकारी सेवादल सिम्पोजियम गान 'सुखों का द्वार सेवा है' प्रस्तुत किया गया।

तत्पश्चात एरोबिक्स के माध्यम से 'सेवा इज द ओनली वे' यानि 'गुरु–आदेश का निःस्वार्थ पालन ही सेवा करने की विधि' का संदेश दिया गया। हरियाणवी नृत्य भी 'हंस–हंस कर सेवा करने और सेवा करके भूल जाने' का भाव समेटे हुए था। सेवादल सदस्यों ने मार्चिंग गीत की धुन पर मार्च किया।

विभिन्न क्षेत्रीय पोशाकों में राजस्थानी नृत्य, मराठी लेजिम, पंजाब के भांगड़ा–गिद्धा नृत्य के द्वारा सेवादल के भाई–बहनों ने सद्गुरु से प्रार्थना करते हुए यही भाव प्रस्तुत किया कि– सेवा की ये मेंहदी हाथों पर यूँ ही सजी रहे। सिर्फ बातों से नहीं बल्कि अपने सुंदर व्यवहार व समर्पित भाव से सेवा करें। जीवन के चरखे से सेवा के धागे तैयार करें। जब भी सेवा का आदेश आये, सदैव हाँ जी ही करें।

सेवा कभी भी बड़ी या छोटी नहीं होती। सेवा चाव से करें और सेवा का जज़्बा हमेशा बना रहे। सदा सद्गुरु का शुकराना करें और इस कालजयी ब्रह्मज्ञान का महत्व पल–पल याद रहे।

मोटर साइकिल रैली द्वारा भी सेवादल के भाई–बहनों ने जीवन में सामंजस्य व संतुलन का महत्व दर्शाया।

एक नृत्य–नाटिका द्वारा बताया गया कि सेवा के विभिन्न कार्य करते हुए मुख में सुमिरण व मन में सद्गुरु की सेवाओं का एहसास रखना है।

डम्बल व ड्रिल के विभिन्न व्यायामों से सेवा में बल के समर्पण की जरूरत को दर्शाया गया। योग के अलग–अलग आसन व मुद्राओं द्वारा जीवन में स्वस्थ तन–मन के सामंजस्यपूर्ण संयोजन की महत्ता को दिखाया गया।

मार्चिंग गीत की धुन पर विभिन्न यूनिटों के बैंड द्वारा प्रदर्शित ताल–मेल से भी सौहार्द प्रदर्शित किया गया।

तत्पश्चात सद्गुरु माता जी ने उपस्थित हजारों सेवादल सदस्यों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि आज निरंकारी सेवादल सिम्पोजियम के खेल वाले दिन आप सब दिल्ली व एन.सी.आर. से आये हैं, सब अपने क्षेत्र से प्रतिनिधि के रूप में यहाँ इकट्ठे हुए हैं।

रजिस्ट्रेशन तो बहुत हुईं पर उनमें से कुछ टीमें जिनको आज मौका मिला, वो यहां पहुंची हैं।

सद्गुरु माता जी ने कहा कि सेवा का जज़्बा शारीरिक तंदुरुस्ती के द्वारा ही सम्भव है। इस आयोजन में सभी ने अपना योगदान दिया, जिससे कि आज यह रूप निखर के आया है। सिम्पोजियम में सभी प्रस्तुतियों व निर्देशों की बारीकियों को ग्रहण करके, वर्दी की जिम्मेदारी के साथ सेवा निभाने वाली बात समझनी जरूरी है।

दातार कृपा करे, सेवा के लिए हमेशा आगे आकर तैयार रहने का जज़्बा दातार हर किसी में ताउम्र बढ़ाता चला जाये। सभी सत्संग और सुमिरण से भी जुड़ते रहें।

प्रवचनों के बाद सद्गुरु माता जी ने बैडमिंटन, क्रिकेट, कबड्डी, खो–खो, 100 मीटर दौड़, बोरी दौड़ आदि खेलों का स्वयं अवलोकन किया। सद्गुरु ने लंगर स्थल पर जाकर भी सेवादारों को आशीर्वाद प्रदान किया। आयोजन स्थल पर बैडमिंटन, शॉट–पुट, गोला-फेंक, लम्बी कूद, क्रिकेट, वालीबॉल, खो–खो, कबड्डी, 100 व 400 मीटर दौड़ आदि का आयोजन किया गया। विभिन्न आयु वर्गों के सैकड़ों प्रतियोगी भाई–बहनों ने इन खेलों में हिस्सा लिया। खेलों के सुंदर संयोजन के लिये एक खेल नियंत्रण कक्ष भी बनाया गया था। खेलों के लगभग 70 विशेषज्ञ दिल्ली व निकटवर्ती क्षेत्रों से अपनी सेवाएं देने पहुँचे थे।

दूसरा दिन

दिल्ली, 22 फरवरी। ग्राउंड नं. 8 में 'निरंकारी सेवादल सिम्पोजियम' के दूसरे दिन दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की लगभग 50 सेवादल यूनिटों ने भाग लिया।

इससे पूर्व हजारों की संख्या में सेवादल, सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन व संग्रहालय सेवा के सेवादार सुबह आठ बजे ही आयोजन स्थल पर पहुंच गए थे। कुछ समय बाद कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसकी थीम थी 'हम हैं सेवादार'। कार्यक्रम को मुख्यतः दो सत्रों में बांटा गया था। दोनों सत्रों की प्रस्तुतियां काफी शिक्षाप्रद व रोचक थीं। 'निरंकारी सेवादल का इतिहास' व 'सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन' पर आधारित ऑडियो-वीडियो प्रेजेंटेशन ने दर्शकों का ज्ञानवर्धन किया। भरतनाट्यम्, क्षेत्रीय नृत्य आदि प्रस्तुतियों द्वारा समर्पण के भाव को दर्शाया गया। 'सेवा–सुमिरण–सत्संग', 'निरंकारी बनना', 'एहसान– दया– कृपा',

'तेरा इक आसरा होवे', 'मैं से हम तक' आदि परिचर्चाओं द्वारा अनेक जरूरी विषयों पर गहन चर्चा की गई। 'वर्दी का सम्मान बख्शो', 'मिशन के नौजवानों' आदि सूफ़ी व सेवा पर आधारित गीत दिल को छू जाने वाले थे। 'प्रेम रतन', 'सेवा को तैयार', 'क़ादर और कुदरत' आदि नाट्य पेशकश के जरिए महत्वपूर्ण विषयों का दिलचस्प व आकर्षक चित्रांकन हुआ। आवश्यक व सम-सामयिक प्रश्नों को भी बीच–बीच मे शामिल किया गया था, जिनके उत्तर सेवादल के वरिष्ठ अधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों ने दिये। साथ ही साथ प्रतिभागियों ने अपने–अपने अनुभव भी सांझे किये।

निरंकारी सेवादल सिम्पोजियम (NSS) पर आधारित गान – 'सुखों का द्वार सेवा है' भी बजाया जाता रहा जिसने प्रतिभागियों को उत्साहित व जागरूक रखा। आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने फरमाया कि- आज सिम्पोजियम का दूसरा दिन भी बहुत कुछ सिखा गया। कल भी खेलकूद में सबने बहुत कुछ सीखा। इसमें सबका बहुत योगदान रहा। सभी यूनिटों ने इतना समय निकाल कर अभ्यास किया।

ऐसी कितनी सेवाएं होती हैं जिनमें जो स्टेज पर दिखते हैं वो ही नज़र आते हैं, लेकिन पीछे जो टीमें होती हैं वो भी कंधे से कंधा मिलाकर, लगन व निष्ठापूर्वक सेवाएं करती हैं।

आज भी यही सीखने को मिला कि सभी सेवा में जुटे हैं, आप यह नहीं कह सकते कि जो वर्दी में हैं, वही सेवा कर रहे हैं। ज्ञान के बाद हम निरंकार के साथ जुड़े हैं तो जीवन का पल–पल ही सेवा है।

सद्गुरु माता जी ने कहा कि सेवा करते हुए, बहुत चेतनता बरतें और यही ध्यान हो कि हम तो साध संगत के सेवक हैं। सेवा निभाते हुए विनम्रता को नहीं खोना है और कहीं भी, कोई ऐसा व्यवहार किसी के साथ नहीं करना है जो हमें शोभा नहीं देता। सिर्फ वर्दी में ही नहीं, वैसे भी किसी के साथ जब भी बात करनी हो तो मन से विनम्र होकर बात करें। ये जिम्मेदारी तो सिर्फ निरंकार से जुड़ कर ही सही तरह से निभाई जा सकती है। अगर हम सही मायनों में निरंकार से जुड़े हैं तो हमारे व्यवहार में भी कोई कड़वाहट नहीं होगी।

सेवा के प्रबन्ध में लगी सेवादल की सभी यूनिटों को दासी मुबारकबाद देती है। दातार सभी पर कृपा करे कि हर सुख सबकी झोली में आये। हर पल को निरंकार की रहमत समझ कर सभी शुकराने के भाव मे रहें। दातार कृपा करे कि सेवा के साथ–साथ सुमिरण, सत्संग के प्रति सबका जज़्बा आगे से आगे बढ़ता चला जाये। सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियां भी सभी निभाते जाएं।

कार्यक्रम रात आठ बजे तक चला। पहले दिन का मंच संचालन श्री अंकुर उप्पल व बहन वीनू ने किया। दूसरे दिन श्री संदीप खन्ना व बहन उपासना ने मंच संचालक की भूमिका निभाई। श्री राकेश मुटरेजा ने कॉर्डिनेटर की सुंदर भूमिका निभाई।

बाबा हरदेव सिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए देश के 1320 सरकारी अस्पतालों में चलाया गया

स्वच्छता एवं वृक्षारोपण अभियान

दिल्ली, 23 फरवरी। स्वच्छ भारत अभियान के ब्रांड एम्बेसडर, सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन ने सरकारी अस्पतालों में मेगा सफाई अभियान का सम्पूर्ण भारत में आयोजन किया। इस स्वच्छता अभियान में लगभग साढ़े तीन लाख स्वयंसेवकों, सेवादल और सन्त निरंकारी मिशन के सक्रिय सदस्यों ने 1320 अस्पतालों के भवनों, शौचालयों, जल निकासी जल क्षेत्रों और पार्कों में स्वच्छता अभियान चलाया गया।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 13 अस्पतालों डॉ. राम मनोहर लोहिया, सफदरजंग, बाबा साहेब अम्बेडकर, जगप्रवेश चंद्र, लोकनायक जय प्रकाश नारायण, डॉ. हेडगेवार आरोग्य संस्थान, दीन दयाल उपाध्याय, गुरु तेग बहादुर, दीप चंद बंधु, संजय गांधी, लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल तथा प्राइमरी हेल्थ सेंटर मेहरोली, रूरल हेल्थ एंड ट्रेनिंग सेंटर नजफगढ़ में गहन स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसके अलावा कई सार्वजनिक पार्क भी इस सफाई अभियान में शामिल किये गए जहाँ सुबह 8 बजे से ही सफाई का कार्य आरंभ कर दिया गया।

सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के स्वयंसेवक स्वच्छता अभियान गतिविधियों द्वारा ऐतिहासिक स्मारकों, समुद्री तटों और नदियों, अस्पतालों, सार्वजनिक स्थानों और विशेष रूप से प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर सफाई करते रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में फाउंडेशन द्वारा 2003 से स्वच्छता और वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है। 2010 से, विभिन्न सामाजिक स्टेशनों को साफ–सुथरा बनाने के लिए पिछले 7 वर्षों से लगातार स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इन प्रयासों को जन-साधरण की भरपूर सराहना मिली है। भारत सरकार द्वारा भी सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के इस अभियान को बहुत सराहा गया।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज का उद्घोष कि – ''जीवन की सार्थकता तभी है, जब यह दूसरों के लिए जिया जाए'' को मूर्त रूप देते हुए सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन मानव कल्याण के अनेक कार्य कर रहा है। बाबा हरदेव सिंह जी का कथन है कि – ''प्रदूषण भीतर हो या बाहर दोनों हानिकारक है'' सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से फाउंडेशन की

सभी सामाजिक गतिविधियों को नियमित रूप से मानव में ईश्वर–अंश को जानकर किया जाता है। देश भर से प्राप्त स्वच्छता अभियान की कुछ सूचना इस प्रकार हैं -

मोहाली (पंजाब) में नगर निगम के कमिश्नर डॉ. कमल कुमार गर्ग ने पौधा लगाकर वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ किया। मोहाली ब्रांच की संयोजक डॉ. जे.के. चीमा ने कहा कि फाउंडेशन ने निरंकारी बाबा जी के आदर्श वाक्य ''जीवन की सार्थकता तभी है, अगर यह दूसरों के लिए जिया जाए'' को व्यवहारिकता के धरातल पर मूर्त रूप करके दिखाया जाता है। स्वच्छता अभियान भी निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के मानव कल्याण के दृष्टिकोण 'प्रदूषण भीतर हो या बाहर, दोनों हानिकारक हैं' का संदेश देता है।

बरनाला (पंजाब) में बाबा आला सिंह पार्क में पौधे लगाए गए। साथ ही निरंकारी सेवादल की ओर से शहीद भगत सिंह पार्क में कचरा डालने वाले ड्रम भी लगाये गये।

बरनाला के संयोजक श्री जीवन गोयल ने बताया कि सेवादारों द्वारा पौधे ही नहीं लगाये गये बल्कि साथ में यह प्रण भी किया गया कि हम इन पौधों की संभाल भी करेंगे।

बेंगलुरु (कर्नाटक)। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु के मल्लेश्वरम स्थित के.सी. जनरल हॉस्पिटल के परिसर में सेवादारों ने सफाई की।

इस अवसर पर श्री सतीशचन्द्र खत्री (ज्ञान प्रचारक, बेंगलुरु), श्री अमृत सिंह, श्री मनोहर शाह जी (क्षेत्रीय संचालक, सेवादल संनिमं.), डॉ. वेंकटेश्वरया (मेडिकल सुपरिडेंट, के.सी. जनरल हॉस्पिटल मल्लेश्वरम, बेंगलुरु) आदि उपस्थित थे। श्री सुनील कुमार रात्रा (जोनल इंचार्ज) ने आभार व्यक्त किया।

रुदौली (अयोध्या)। शाखा रुदौली द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र परिसर की सफाई की गई। लायन्स क्लब के डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन व समाज सेवी डॉ. निहाल रजा, मवई के बी.डी.ओ. श्री राम विलास जी, डॉ. अंजू जायसवाल तथा जिला पंचायत सदस्य श्री चन्द्रभान पासवान आदि ने वृक्षारोपण किया।

जौनपुर (उ.प्र.)। जिला अस्पताल में स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत सैकड़ों लोगों ने योगदान दिया। इस लड़ी में पट्टी नरेन्द्रपुर, गौराबाद शाहपुर, इजरी, शाहगंज, नौपेड़वा, बसरही, दुर्गापुर, बदलापुर, जासोपुर में सफाई एवं वृक्षारोपण किया गया।

भदोही (उ.प्र.)। जनपद भदोही में स्कूल और ज्ञानपुर में महाराजा चैत सिंह राजकीय अस्पताल में सफाई तथा वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। संयोजक श्री राजेश कुमार ने सभी के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

बेथरा तथा मुडुवा, सुलतानपुर (उ.प्र.) शाखा द्वारा स्थानीय अस्पताल तथा विद्यालय परिसरों की सफाई की गई।

देहरादून (उत्तराखण्ड) यहां दून अस्पताल में स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत सी.एम.एस. श्री के.के. अम्टा एवं श्री सुशील ओझा की अगुवाई में सफाई की गई।

अमेठी जनपद की अन्य शाखाओं परसावां, शाहगढ़, अहुरी, जगदीशपुर व गौरीगंज के सैकड़ों जवानों ने मिलकर अपने-अपने क्षेत्र के अस्पतालों की साफ-सफाई व वृक्षारोपण किया।

करौंदी शाखा की मुखी श्रीमती विद्या देवी ने निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के वचनों को दोहराते हुए बताया कि 'जीवन की सार्थकता तभी है, अगर वह दूसरों के लिए जिया जाए।''

और वृक्षारोपण किया गया। नगर परिषद सभापति श्री कमल कंसाना ने स्वयं साफ-सफाई की।

दूर देशों से

बर्मिंघम, 23 फरवरी। युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी को समर्पित आज का दिन पूरे यूरोप में ग्रीस से लेकर इटली तक बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। स्थान-स्थान पर पौधे लगाकर सफाई अभियान भी चलाया गया। पश्चिमी मिडलैंड में सत्संग की अध्यक्षता 'उपाशक' जी ने की।

यॉर्कशायर (यू.के.), 22 फरवरी। यहां सन्त निरंकारी मंडल यू.के. की देख-रेख में सेवादल के नौजवान अधिकारी और साध संगत ने वन अधिकारियों के सहयोग से 5000 से भी ज्यादा पौधे लगाये। यॉर्कशायर के डिप्टी लेफ्टिनेंट जस जी और पश्चिमी मिडलैंड के डिप्टी लेफ्टिनेंट गुरप्रीत भाटिया जी ने महारानी की ओर से उपस्थिति दर्ज कराई।

श्री एच.एस. 'उपाशक' जी (महासचिव, यू.के. संनिम.) ने सद्गुरु का आशीर्वाद देते हुए कहा- वैसे तो पौधे लगाना ही अपने आपमें एक अच्छा काम है लेकिन 23 फरवरी के आस-पास निरंकारी सन्तों की गुरु पूजा भी हो जाती है, जब यह शुभ काम सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज को समर्पित किया जाता है।

अलवर (राजस्थान)। राजकीय गीतानंद शिशु चिकित्सालय, राजीव गांधी सामान्य चिकित्सालय, महिला चिकित्सालय व टी.बी. अस्पताल में सफाई अभियान चलाया गया जिसमें अलवर शहर के सैकड़ों निरंकारी श्रद्धालुओं व सेवादारों ने अहम् योगदान दिया।

नाशिक (महाराष्ट्र)। बोरगड समागम ग्राउंड पर स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया गया। महाराष्ट्र सन्त समागम नाशिक में बोरगड में हुआ था। समागम स्थल पर स्वच्छता अभियान चलाने का निर्णय किया गया। शुभारंभ के अवसर पर नाशिक के उपमहापौर भिकुबाई बागुल, नाशिक के संयोजक गुलाब जी पंजवाणी तथा सेवादल संचालक गुरूदास जी शेटकर उपस्थित थे।

धौलपुर (राजस्थान)। सरकारी अस्पताल श्री केशर महारानी मेमोरियल मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संस्थान में सफाई

दिल्ली के दंगा प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री व लंगर वितरण

दिल्ली, 10 मार्च। सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के आशीर्वाद से सन्त निरंकारी मिशन की तरफ से दिल्ली के दंगा प्रभावितों को राहत समग्री लंगर वितरण किया गया। शिव विहार, करावल नगर, चांद बाग, भागीरथ विहार, बृजपुरी आदि प्रभावित क्षेत्रों में 1 मार्च से 9 मार्च तक लंगर व राहत सामग्री का वितरण किया गया।

सन्त निरंकारी सत्संग भवन यमुना विहार, बृजपुरी, वजीराबाद रोड नॉर्थ ईस्ट दिल्ली के सन्तों-महापुरुषों ने लंगर वितरण सेवा में भरपूर योगदान दिया। परम पूज्य बहन रेणुका जी, (ब्रिगेडियर से.नि.) श्री पी.एस.चीमा महासचिव (संनिमं.), डॉ. नरेश जी, श्री जे.एस.खुराना, श्री शुभ करण, श्री ब्रह्मप्रकाश चौधरी, सेवादल संचालक श्री बुद्ध राम आदि महात्माओं ने योगदान दिया।

सद्गुरु माता जी की हरियाणा, पंजाब एवं जम्मू-कश्मीर की कल्याण-यात्रा

प्रभु को जानकर भक्ति करने से आयेगा जीवन में आनन्द

- सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

अम्बाला (हरियाणा), 1 मार्च। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने कहा कि परमात्मा का किया हुआ कार्य कभी गलत नहीं हो सकता। परमात्मा हमारे लिए जो भी करता है, उसमें हमारा भला ही छिपा रहता है। यह एहसास हमें तब होता है, जब हम किसी विपत्ति से सुरक्षित निकलते हैं। आप अम्बाला छावनी स्थित सन्त निरंकारी सत्संग भवन में आयोजित सत्संग में श्रद्धालुओं को सम्बोधित कर रहे थे।

आपने कहा कि परमात्मा को जानने के बाद जब हम भक्ति करते हैं तो भक्ति व्यवहारिक जीवन का अंग बन जाती है। इसके लिए फिर किसी रटन की आवश्यकता नहीं होती। चलते-फिरते हर कार्य करते हुए हमारा जीवन फिर भक्तिमय ही रहता है।

उन्होंने परमात्मा को जानने की बात को एक उदाहरण से समझाते हुए कहा कि जिस प्रकार किसी परिवार में रिश्ता होता है, दोनों परिवारों के सदस्य एक-दूसरे को जानने लगते हैं और फिर उनमें प्यार की डोर मजबूती से बंध जाती है। प्रभु-परमात्मा की जानकारी ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के बाद निराकार की भक्ति का आनन्द वास्तविकता में बढ़ जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह प्रत्येक प्राणी से प्यार करने लगता है व सबके भले की कामना करता है।

उन्होंने कहा कि कई बार परिस्थितियां हमारे अनुकूल न होने पर हम नाखुश होते हैं, लेकिन कुछ समय बाद जब

विपरीत परिस्थिति से निकलते हैं तो हम ये एहसास करते हैं कि जो हुआ अच्छा ही हुआ। परमात्मा हमारे लिए जो करता है उसमें हमेशा भला ही छिपा होता है। अनेक महात्माओं ने भी अपने भाव व्यक्त किए।

जोनल इंचार्ज श्री सुरेन्द्र पाल सिंह एवं अंबाला की संयोजक श्रीमती मंजीत कौर जी ने आभार व्यक्त किया।

बरनाला (पंजाब), 2 मार्च। व्यक्ति मानवीय गुणों को अपना कर ही इंसान कहलाने का हकदार बनता है। मानवता ही सच्चा धर्म है। उक्त उद्गार सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने यहां अनाज मण्डी के प्रांगण में श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि इन्सान माया में भूल जाता है तथा तंगदिली को अपनाता हुआ परमात्मा को आंखों से ओझल कर लेता है। मानव माया में ग्रस्त होकर प्यार, सत्कार की भावना भूलता जा रहा है, वैर, नफ़रत, ईर्ष्या में ग्रस्त हो रहा है, जबकि सन्तों-महात्माओं ने हमें दूसरों के आंसू पोंछने तथा प्यार, विनम्रता, सहनशीलता व आपसी भाईचारे से रहने की प्रेरणा दी है।

सद्गुरु माता जी ने 'दीवार रहित संसार' का निर्माण करने व लोगों के बीच प्यार के पुल बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि तंगदिली की दीवारों से ही आपसी दूरी बढ़ती है, इसलिए इन दीवारों को खत्म करना बहुत ही जरूरी है। दीवार व पुल दोनों को बनाने के लिए चाहे मैटीरियल एक जैसा लगता है, परन्तु दूरी पैदा करने का काम करती है, जबकि पुल हमेशा ही जोड़ने का काम करता है।

हमें अपनी पारिवारिक व सांसारिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देनी चाहिए, लेकिन इसके साथ ही जो हमारे जीवन का असली उद्देश्य है, उसे भी हमेशा याद रखना चाहिए। परमात्मा का एहसास हमेशा मन में बना कर रखना है।

बठिंडा के जोनल इंचार्ज श्री एस.पी. दुग्गल एवं बरनाला के संयोजक श्री जीवन गोयल ने सद्गुरु का अभिनन्दन किया।

लुधियाना (पंजाब), 3 मार्च। मन को स्थिर रखने के लिए हर पल प्रभु का एहसास बनाए रखें। यह उद्गार सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने लुधियाना बायपास स्थित संगोवाल के सन्त निरंकारी सत्संग भवन में आयोजित विशाल सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए।

आपने कहा कि भक्ति तभी शुरू होती है जब प्रभु-परमात्मा को जाना जाता है। बिना देखे प्रीति नहीं होती। जब मनुष्य को प्रभु का दीदार होता है, तब उसका हृदय परिवर्तित होता है। मन की अवस्था बदलने से एक-दूसरे के लिए प्रेम वाला भाव बढ़ता है। जो मन पहले संकीर्णताओं से भरा हुआ था, वह विशाल हो जाता है। सन्तों का संग प्राप्त करके सत्य की रोशनी प्राप्त करना है साथ ही दूसरों को भी प्रेरणा देनी है।

जीवन में हर तरह के नकारात्मक भावों से दूर रहना है। आपका अच्छा व्यवहार ही आपको सभी के संग रहने की क्षमता प्रदान करेगा। युगों-युगों से सन्तजन यही समझाते आ रहे हैं कि अपनी सोच पर मनमत को हावी न होने दें। मनों में प्यार, नम्रता का वातावरण बनाए रखना है। अगर आप चाहते हैं कि सभी के दिल में आपके लिए प्यार हो तो आपको अपने व्यवहार में बदलाव लाना होगा।

श्री एच.एस. चावला (प्रभारी, ब्रांच प्रशासन, पंजाब एवं चण्डीगढ़) ने कृतज्ञता व्यक्त की।

जम्मू (जम्मू-कश्मीर), 4 मार्च। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने थाण्डीकुई, विजयपुर क्षेत्र में आयोजित

भव्य सत्संग समारोह में श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि युगों-युगों से सन्तों ने मानव को मानव बनने की प्रेरणा दी है। प्रेम, करुणा, स्नेह और शान्ति से जीवन जीने की सिखलाई सन्तजन ही देते रहे हैं।

सद्गुरु माता जी ने कहा कि जीवन में सदैव निराकार का एहसास बना रहे, यह आवश्यक है। जाति, रंग और धर्म के आधार पर विभिन्नता हो सकती है किन्तु ध्यान रहे कि सब में एक ही नूर समाया हुआ है। मानवता को अपनाना ही मानव धर्म है। दुनिया में प्यार की सबसे अधिक जरूरत है, इसलिए कहा है कि 'वैर नफ़रत की तोड़ दीवारें प्यार के पुल बनाते जाएं।' सन्त का जीवन महकदार होना चाहिए।

सत्संग समारोह में अनेक गण्यमाण्य सज्जन भी सम्मिलित हुए। मुख्य वक्ताओं में श्री कृष्णलाल, अरुणा डोगरा, डॉ. विनोद साहिब, श्री बचित्तर पाल सिंह (जोनल इंचार्ज, ऊधमपुर) तथा श्री अजीत सिंह (जोनल इंचार्ज, जम्मू) इत्यादि थे।

अमृतसर (पंजाब), 6 मार्च। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने सन्त निरंकारी सत्संग भवन खानकोट में पधारे तो भक्तजनों के चेहरे खिल उठे।

''मिशन प्यार का युगों-युगों से ब्रह्म के साथ मिलाता आया'' पर आधारित गीत, कविताओं एवं विचारों द्वारा वक्ताओं ने आशीर्वाद प्राप्त किया। यहां हजारों की संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

सद्गुरु माता जी ने अपने प्रवचनों में फरमाया कि 'जब परमात्मा की जानकारी ब्रह्मज्ञान के माध्यम से प्राप्त कर लेते हैं तो ही मन में प्यार, नम्रता, सहनशीलता व सत्कार के भाव आ जाते हैं। फिर अपने आप ही सेवा का भाव उत्पन्न होता है और सुमिरण के माध्यम से इस निरंकार प्रभु के साथ संबंध बना रहता है।

उन्होंने कहा कि विपरीत हालात कभी भी भक्तों के मार्ग में रुकावट नहीं बनते। आज भारी वर्षा होने के बावजूद भी भक्तजन उत्साहपूर्वक पहुंचे। हमें हर रोज कम से कम एक अवगुण त्यागकर, एक गुण अवश्य धारण करना चाहिए।

अन्त में श्री सुखदेव सिंह जी (जोनल इंचार्ज, अमृतसर) ने सद्गुरु माता जी का शहर में पधारने पर स्वागत किया और सभी का धन्यवाद भी किया।

सद्गुरु माता जी की पावन छत्रछाया में 7 मार्च को जालंधर में सामूहिक विवाह समारोह भी आयोजित किया गया जिसमें आठ जोड़े विवाह बंधन में बंधे।

इस कल्याण यात्रा का अंतिम पड़ाव 8 मार्च को कपूरथला था, लेकिन अपरिहार्य कारणों से सत्संग समारोह रद्द कर दिया गया। दयालु सद्गुरु ने 7 और 8 मार्च को यहां पहुंचकर भक्तजनों को दर्शन देकर कृतार्थ किया। जोनल इंचार्ज श्री गुलशन आहूजा जी ने कृतज्ञता व्यक्त की।

इस कल्याण यात्रा में निर्धारित शहरों के अलावा पटियाला, जालंधर, लोंगोवाल, रायकोट, भोगपुर, गरदीवाला, सुजानपुर, साम्बा, कठुआ, कोटली, तारागढ़, फतेहगढ़ चूड़ियां, जंडियालागुरु, रईयां, करतारपुर एवं कपूरथला में भी दर्शन दिये।

सद्गुरु माता जी ने पंजाब के बेतियाना, झाण्डे (लुधियाना) तथा जम्मू-कश्मीर के विजयपुर, बीसना एवं कटरा सत्संग भवनों का उद्घाटन भी किया।

8 मार्च को दोपहर बाद दिल्ली के लिए प्रस्थान किया और देर रात्रि दिल्ली आगमन हुआ। इस प्रकार यह लघु कल्याण-यात्रा सम्पन्न हुई।

शिक्षक शिक्षा के साथ मानवीय गुण भी प्रदान करें

- सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

सोहना (गुरुग्राम), 15 फरवरी। निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह मेमोरियल कॉलेज, सोहना के वार्षिकोत्सव समारोह को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने कहा कि संसार में भौतिक वस्तुएं केवल आराम मात्र के लिए होती हैं जिनका सदुपयोग करना चाहिए न कि दुरुपयोग। शिक्षकों को शिक्षा के साथ–साथ छात्रों को मानवीय गुण भी प्रदान करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में मानवता का समावेश हो और श्रेष्ठ संस्कार विकसित हों।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने कॉलेज टाई व एक्सीलेंस टाई का प्रक्षेपण किया। उन्होंने विश्वविद्यालय स्तर पर वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाले महाविद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों तथा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक एवं गुरुग्राम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम में आयोजित युवा महोत्सव में विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कार के माध्यम से गौरवान्वित किया।

सर्वप्रथम गुरु वंदना 'गुरु ही सुमिरण, गुरु ही पूजा' के साथ सद्गुरु माता जी ने दीप–प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

तत्पश्चात सम्पूर्ण हरदेव बाणी का गान विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.एम.एस. खत्री जी ने महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए महाविद्यालय के प्राचीन से नवीन रूपांतरण एवं उपलब्धियों का वर्णन किया। इसके पश्चात श्री आर. एस. मन्हास जी, (प्रधान, प्रबंध समिति) ने अपने स्वागत भाषण के माध्यम से सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं अन्य विशिष्ट, गण्यमाण्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने सभी शिक्षक गणों की सराहना करते हुए विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने जीवन में शिक्षा के मूल्य एवं मानवता के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया।

इसी श्रृंखला में विद्यार्थियों ने हरियाणा के लोकप्रिय हरियाणवी नृत्य का शानदार प्रदर्शन किया और कार्यक्रम के

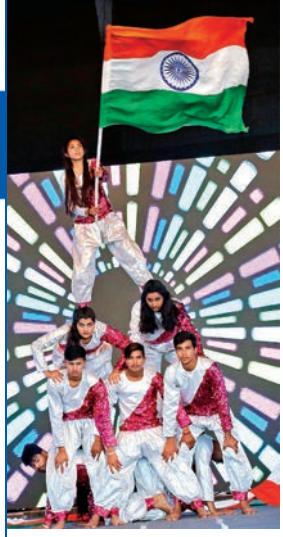

भव्य समापन पर सभी प्रतिभागियों ने मिलकर एक सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया। तत्पश्चात राष्ट्रगान के साथ वार्षिकोत्सव का भव्य समापन हुआ।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के आशीर्वाद द्वारा निर्मित निरंकारी कॉलेज की नई इमारत का लोकार्पण किया और अलवर रोड स्थित महाविद्यालय में पी. जी. ब्लॉक का भी उद्घाटन किया।

उल्लेखनीय है कि- एन.बी.जी.एस.एम. कॉलेज, एक सह-शैक्षणिक संस्थान है जो कि गुरुग्राम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम से संबंद्ध है और क्षेत्र के अग्रणी कॉलेजों में से एक है। वर्तमान में 1300 से अधिक छात्र और 47 संकाय सदस्य हैं। कॉलेज ने कला और वाणिज्य के क्षेत्र में 45 साल की समृद्ध विशेषज्ञता प्राप्त की है और हाल ही में विकसित प्रयोगशालाओं और सुविधाओं के साथ विज्ञान विभाग की शुरुआत हुई है। 1975 में स्थापित, कॉलेज ने हर साल विश्वविद्यालय में कई मेधावी पदों को प्राप्त करके शिक्षा और खेलों में अपनी योग्यता साबित की है। मंच संचालन संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका श्रीमती लिपिका आर्य व अंग्रेजी विभाग की प्राध्यापिका श्रीमती स्वाति शर्मा ने किया।

दीक्षांत समारोह में श्री दुष्यन्त चौटाला ने कहा -

छात्र देश सेवा के लक्ष्य को सर्वोपरि रखें

सोहना (गुरुग्राम), 14 फरवरी। निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह मेमोरियल कॉलेज के दीक्षांत समारोह का आयोजन महाविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। इस समारोह में हरियाणा के उप मुख्यमंत्री श्री दुष्यंत चौटाला जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

समारोह में सन्त निरंकारी मंडल की कार्यकारिणी के सदस्य श्री एस.सी.तलवाड़, सी.जी., स्टारेक्स विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री अशोक दिवाकर तथा महाविद्यालय की प्रबंध समिति के पूर्व प्रधान श्री एम.सी.नागपाल सहित अनेक गण्यमाण्य सज्जनों ने भाग लिया। दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए हरियाणा के उप-मुख्यमंत्री श्री दुष्यंत चौटाला ने कहा कि छात्रों को अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए सेवा और बलिदान के महान मूल्यों को अपनाना चाहिए। अपने देश की सेवा के लक्ष्य को ध्यान में रखे बिना शिक्षा अधूरी है।

उन्होंने 140 छात्रों को बी.ए., बी.कॉम., बी.सी.ए., एम.ए. और एम.कॉम. के छात्रों को डिग्री प्रदान की। इसके अलावा, शिक्षा, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को भी पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यकारी समिति के अध्यक्ष श्री आर. एस. मन्हास ने मुख्य अतिथि श्री दुष्यंत चौटाला का पुष्प गुच्छ द्वारा स्वागत किया । गवर्निंग बॉडी के महासचिव, श्री एस. एस. सेठी ने विगत वर्षों में कॉलेज में हुए विकास पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. एम.एस. खत्री ने गतिविधियों के क्षेत्र में हुए उत्थान का उल्लेख किया।

सन्त निरंकारी पब्लिक स्कूलों की प्रमुख श्रीमती रमन मन्हास जी ने श्री दुष्यन्त चौटाला को एक पौधा भेंट किया।

युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी व अन्य बलिदानी सन्तो की स्मृति को समर्पित

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की पावन छत्रछाया में ग्रेटर दिल्ली का

मानव एकता दिवस

24 अप्रैल, 2020 (शुक्रवार) को आयोजित होगा

समयः प्रातः 10.00 से सायं 4.00 बजे

प्रवचन (सद्गुरु माता जी): सायं 4.00 बजे

❖ सत्संग कार्यक्रम के दौरान रक्तदान शिविर प्रातः 9.00 से दोपहर 2.00 बजे तक चलेगा।

❖ लंगर वितरण की व्यवस्था समागम स्थल पर ही होगी।

स्थान : समागम ग्राउंड नं. 2, निरंकारी चौक, बुराड़ी रोड, दिल्ली-9

- सी.एल. गुलाटी, सचिव (मुख्यालय)
सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009

युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के साथ
अपना बलिदान देने वाले

सेवा के पुंज, वीरता के प्रतीक

चाचा प्रताप सिंह जी को शत् शत् नमन

पाठक मंच

सन्त निरंकारी पत्रिका मार्च 2020 प्राप्त हुई। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के विचार व प्रेरणादायी जीवन पढ़कर प्रसन्नता हुई। महाराष्ट्र सन्त समागम, नाशिक तथा सद्गुरु माता जी की कल्याण यात्राओं का जीवन्त विवरण अच्छा लगा। गीत, लोकगीत, काव्य प्रवाह प्रभावशाली हैं। सद्गुरु माता जी कल्याण यात्राओं में छोटी-छोटी जगहों पर रहने वाले भक्तों को भी राह चलते आशीर्वाद देकर खुशी देते हैं ऐसे फोटो देखकर खुशी हुई। दातार कृपा करे कि पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी महात्मा इसी प्रकार मानवता की सेवा करते रहें।

- **मनोज गौहर** (महू, म.प्र.)

मार्च 2020 की 'सन्त निरंकारी' हिन्दी पत्रिका प्राप्त हुई। सभी लेख-कविताएं-गीत और सद्गुरु माता जी की कल्याण यात्राओं का विवरण व आशीर्वाद रूपी लिखी विचारें पढ़ीं, जो कि मनभावन व मार्गदर्शन देने वाली है। सद्गुरु वचनामृत, 'ज्ञान के साथ ध्यान भी', 'शुकराना ही भक्ति है' तथा 'दिशा युक्त युवा शक्ति' लेख अति सराहनीय हैं। लेखकों को शुभकामना कि भविष्य में भी ऐसे ही लेख पाठकों को मिलते रहें।

- **हरि चन्द आहूजा** (दिल्ली)

>> पटियाला (पंजाब) में श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

>> सद्गुरु माता सुदीक्षा जी फतेहगढ़ चूड़िया (पंजाब) में श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए

>> सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के साथ कपूरथला (पंजाब) की बाल संगत के बच्चे

Registered with the Registrar of Newspaper
For India Under RNI Number 723/57

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/135/2018-20
Licence Number U(DN)-25/2018-20
Licenced to Post Without Pre Payment

>> सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के सान्निध्य में ग्राउण्ड नं. 8, निरंकारी चौक, दिल्ली में बाबा हरदेव सिंह जी के जन्मदिवस पर आयोजित सत्संग समारोह का दृश्य

>> कोटली मुगलां, पठानकोट (पंजाब) में सद्गुरु माता सुदीक्षा जी स्थानीय श्रद्धालुओं का अभिवादन स्वीकार करते हुए

>> सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के सान्निध्य में अमृतसर (पंजाब) में आयोजित सत्संग समारोह में उपस्थित विशाल जनसमूह

Posted at NDPSO
Prescribed Dates 27th & 28th
Dates of Publication : 20th & 21st
Advance Month